सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : tameer1963@gmail.com
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

सच्चा राही
A/c. No. 10863759642 (Current A/c.)
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.
कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 0522–2740406 अथवा ईमेल: tameer1963@gmail.com पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

अप्रैल, 2019 वर्ष 18 अंक 2

सलाम हैं उन पर पढ़ते हम सब

अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह ख़िलक़त का ख़ालिक़ अल्लाह
अरज़ो समा और चाँद सितारे, सब का ख़ालिक़ है अल्लाह
सूरज से है दुन्या रौशन, सूरज से है सब का जीवन
सूरज खुद से बना नहीं है, सूरज का ख़ालिक़ अल्लाह
ख़िल्क़त का मस्जूद है अल्लाह, ख़िल्क़त का माबूद है वह
शिर्क कुफ़्र पर मरेगा जो वह, जलेगा दोज़ख़ में वल्लाह
करो इबादत अपने रब की, करो इताअ़त उसके नबी की
करो इबादत रब की रिज़ा को, जन्नत दे तुम को अल्लाह
नबी मुहम्मद रब के पयम्बर, उनकी ताअ़त लाज़िम हम पर
सलाम हैं उन पर पढ़ते हम सब, रहमत उन पर करता अल्लाह

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	08
हज़रत मौलाना मुहम्मद वाज़ेह	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	10
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	12
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	13
वास्तविक सफलता	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	14
हज़रत मुआविया रज़ि0	मौलाना तक़ी उस्मानी	18
हमारी सफलता नबी	मौलाना सय्यिद मु0 हम्ज़ा हसनी नदवी	20
हुजूर सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	21
अल्लाह की तलवार	मौलाना मुहम्मद तारिक़ नोमान	22
इल्मे दीन और जदीद तालीम	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	26
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	28
शाबान का मुबारक महीना	इदारा	32
मौलाना वाज़ेह रहमतुल्लाहि	कामरान अशरफ	33
परीक्षा की तैयारी	शमीम इक़बाल	38
सुहबते नबवी	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	40
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुरआन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-माइदाः

अनुवाद–

और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा उसकी ओर और पैग़म्बर की ओर आ जाओ तो वे कहते हैं कि हमने जिस पर अपने बाप दादा को पाया वही हमको काफ़ी है चाहे उनके बाप–दादा ऐसे हों कि न कुछ जानते हों और न सही राह चलते हों[1] **(104)** ऐ ईमान वालो! अपनी चिन्ता करो तुम अगर सही रास्ता पा गए तो जो बहक गया वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ता तुम सब को अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है तो वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे थे[2] **(105)** ऐ ईमान वालो! जब तुम में किसी को मौत आ पहुंचे तो वसीयत के समय तुममें से दो विश्वसनीय गवाह हों या अगर तुम यात्रा पर हो और मौत की मुसीबत आ जाए तो तुम्हारे अलावा दूसरे (ग़ैर मुस्लिमों में से) दो (गवाह) हो जाएं अगर तुम्हें शक हो तो नमाज़ के बाद तुम इन दोनों को रोक लो तो वे दोनों अल्लाह की क़सम खाएं कि हम किसी क़ीमत पर इसका सौदा नहीं करेंगे चाहे कोई रिश्तेदार ही क्यों न हो और न हम अल्लाह की गवाही छिपायेंगे वरना तो हम गुनहगार हैं[3] **(106)** फिर अगर यह पता चल जाये कि गुनाह इन दोनों के ही ऊपर है तो (मृतक के) सबसे क़रीबी लोगों में से जिनका हक़ मारा गया है दो दूसरे इन दोनों की जगह खड़े हों फिर वे दोनों अल्लाह की क़सम खा कर कहें कि हमारी गवाही इन दोनों की गवाही से ज़ियादा सही है और हम हद से आगे नहीं बढ़े हैं वरना तो हम ही अन्यायी हैं[4] **(107)** इससे लगता है कि वे सही–सही गवाही दे देंगे या वे डरेंगे कि इनकी कसमों के बाद कसमें उलटी न पड़ जाएं और अल्लाह से डरते रहो और सुनते रहो और अल्लाह तआ़ला नाफ़रमान कौम को राह नहीं चलाता[5] **(108)** जिस दिन अल्लाह पैग़म्बरों को इकट्ठा करेगा फिर (उनसे) पूछेगा तुम्हें क्या जवाब मिला था वे कहेंगे हमें मालूम नहीं बेशक आप ही हैं जो ढ़की–छिपी चीज़ों को खूब जानते हैं[6] **(109)** जब अल्लाह कहेगा ऐ ईसा पुत्र मरियम अपने ऊपर और अपनी माँ पर मेरे एहसान को याद करो जब मैंने रूहुल कुदुस (जिबरईल) के द्वारा

तुम्हारी मदद की, तुम लोगों से गोद में भी बात करते थे और अधेड़ उम्र में भी[7] और जब मैंने तुम को किताब व हिकमत (तत्वदर्शिता) और तौरेत व इंजील की शिक्षा दी और जब तुम मेरे आज्ञा से मिट्टी से पक्षी के रूप बनाते थे और उसमें फूंकते थे तो वह मेरी आज्ञा से पक्षी बन जाता था और तुम मेरी आज्ञा से पैदाइशी अंधे और कोढ़ी को ठीक कर दिया करते थे और जब तुम मेरी आज्ञा से[8] मुर्दों को निकाल खड़ा करते थे और जब मैंने बनी इस्राईल को तुम से रोक कर रखा था जब तुम उनके पास खुली निशानियां लेकर आए तो उनमें इनकार करने वालों ने कहा कि कुछ नहीं यह तो खुला जादू है(110) और जब मैंने हवारियों (साथियों) के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे पैग़म्बर पर ईमान ले आओ वे बोले हम ईमान ले आए और तू गवाह रह कि हम मुसलमान ही हैं(111) जब हवारियों (साथियों) ने कहा कि ऐ ईसा पुत्र मरियम क्या आप का पालनहार हम पर आसमान से भरा दस्तरख़्वान उतार सकता है उन्होंने कहा अगर तुम ईमान वाले हो तो अल्लाह से डरो(112) वे बोले हम चाहते हैं कि हम उसमें से खाएं और हमारे दिलों को संतुष्टि हो जाए और यह भी हम जान लें कि आपने हम से सच बताया और हम इसके गवाह हो जाएं(113)

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. विचार न करने वालों और न मानने वालों का जवाब आमतौर पर यही होता है।

2. रास्ता पाना यह है कि आदमी ईमान व तकवा (संयम) अपनाए खुद बुराई से बचे और दूसरों को बचाने की कोशिश करे फिर अगर कोई नहीं मानता तो उसका कोई नुकसान नहीं, इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं है कि दूसरों की फिक्र न करे, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने इस आयत की यही व्याख्या की है।

3. इस आयत में वसीयत का तरीक़ा बयान हुआ है, मुसलमान मरते समय यदि किसी को अपना माल हवाले करे तो बेहतर है कि दो मुसलमानों को गवाह बनाए और अगर यात्रा आदि हो और मुसलमान गवाह न मिलें तो गैर मुस्लिम को भी गवाह बनाया जा सकता है और यह आशंका हो कि वे यह बात छिपाएंगे तो किसी नमाज़ के बाद भीड़ में उनसे क़सम ली जाए कि जो उनहें वसीयत की जा रही है वे उसमें से कुछ छिपाऐगे नहीं।

4. मृतक के वारिसों को मालूम हो जाए कि जिसमें वसीयत की गई थी उन्होंने कुछ छिपा लिया है और वे इस्लामी गवाही से ज़ियादा स्वीकार किए जाने के हक़दार हैं, इसके शाने नुजूल में यह घटना बताई जाती है कि एक मुसलमान ''बुदैल'' ने दो ईसाईयों के साथ यात्रा की, शाम देश पहुंच कर बुदैल बीमार पड़ गये उन्होंने

अपने सामान की सूची बनाई और सामान में रख दी और जब बीमारी ज़ियादा बढ़ी तो दोनों ईसाईयों को वसीयत की (वसी बनाया) और कहा कि यह माल हमारे वारिसों के हवाले कर देना, वापसी पर उन्होंने वारिसों को माल हवाले कर दिया, लेकिन एक चांदी का प्याला छिपा लिया, वारिसों को सूची मिली तो उसमें प्याले का भी उल्लेख था पूछने पर उन्होंने इनकार कर दिया और कसम खाई कि हमने कोई चोरी नहीं की, फैसला उनके पक्ष में हो गया, कुछ समय के बाद वह प्याला उन्होंने सोनार के हाथ बेचा जब पकड़े गये तो उन्होंने कह दिया यह प्याला हमने मृतक से खरीदा था, मृतक के वारिसों ने फिर मुक़द्मा किया जब वह ईसाई मुद्दई थे उनसे गवाह मांगे गए वे प्रस्तुत न कर सके इसलिए दो वारिसों से जो मृतक के सगे संबंधी थे कमस ली गई कि प्याला मृतक की संपत्ति थी और प्याले की कीमत वारिसों को दिलवाई गई।

5. वारिसों को शक हो तो कसम का आदेश रखा ताकि कसम के डर से शुरु ही में झूठ न निकले फिर भी अगर उनकी बात झूठ निकले तो वारिस कसम खाएं यह भी इसलिए कि वे कसम में धोखा न करें और जानें कि अंत में हमारी कसम उलटी पड़ेगी।

6. उम्मतों (समुदायों) के सामने पैग़म्बरों से पूछा जाएगा कि तुम्हारी दावत (बुलावे) का तुम्हारी उम्मत ने क्या जवाब दिया? तो वे कहेंगे कि हमें मालूम नहीं हम तो ज़ाहिर को जानते थे और उसके अनुसार फ़ैसला करते थे और अब फ़ैसला हक़ीक़त पर होने वाला है और हक़ीक़त को सिर्फ़ तू ही जानता है।

7. अधेड़ उम्र में बात करना भी हज़रत ईसा के लिए एक मोजिज़ा इसलिए है कि वे जवानी ही में दुनिया से उठा लिए गए थे जब क़यामत के क़रीब फिर उतरेंगे और प्राकृतिक उम्र को पहुंचंगे।

8. बार–बार ''बिइज़्नी'' (मेरे आदेश से) दोहराने से बात साफ़ की जा रही है कि पैग़म्बरों के द्वारा जो मोजिज़े (चमत्कार) प्रकट होते हैं वह उनके हाथों से तो होते हैं मगर अस्ल करने वाला अल्लाह है दुन्या में जो कुछ होता है वह सब उसी के करने से होता है कोई पैगम्बर अपने अधिकार से मोजिजा प्रकट नहीं कर सकता जब तक अल्लाह का आदेश न हो और न वह अपनी हर इच्छा पूरी कर सकता है जब तक अल्लाह का आदेश न हो, पैग़म्बरों के सरदार (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सम्बोधित करके कह दिया गया कि ''आप जिसको चाहें हिदायत नहीं दे सकते अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के वर्णन में बार –बार ''बिइज़्नी'' की तकरार इसलिए भी है कि कोई उनको खुदाई में शरीक न समझ ले जैसा कि ईसाईयों को धोखा हुआ, और उन्होंने हज़रत ईसा को खुदा का बेटा समझ लिया और भटक गए।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्यारे नबी की प्यारी बातें

इल्म की फज़ीलत

—अमतुल्लाह तस्नीम

दीन की समझ फज़्ले खुदावंदी की अलामत हैः–

हज़रत मुआ़विया रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआ़ला जिसके साथ भलाई करना चाहता है तो उसको दीन की समझ अता फरमाता है। (बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, दो आदमियों के हाल पर रश्क करना ठीक है एक उस आदमी पर जिसको अल्लाह तआला ने माल अता फरमाया और हक़ के साथ खर्च करने की तौफीक़ और सलीक़ा भी दिया, और दूसरा वह आदमी कि अल्लाह तआ़ला ने उसको इल्म दिया है वह उस इल्म के मुताबिक लोगों में फैसला करता है और सिखाता है।

(बुखारी—मुस्लिम)

दीन की समझ हासिल करने वालों की मिसालः–

हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस इल्मो हिदायत के साथ मैं आया हूं उसकी मिसाल ऐसी है जैसे बारिश, कि जमीन के एक हिस्से पर बारिश हुई, वह हिस्सा अच्छा है जिसने पानी को सोख लिया, वह जमीन हरी भरी हो गयी, खूब नये नये कल्ले फूटे, घास उगी, और उसी में दूसरा टुकड़ा था जो सख्त था, उसने पानी को रोक लिया जिससे तालाब और झील बने तो उस पानी से अल्लाह तआ़ला ने खूब फायदा पहुंचाया, लोगों ने उससे पानी पिया, जानवरों को पिलाया, खेती सींची, और एक टुकड़ा जो चटयल मैदान है कि पानी सोखने और रोकने की उसमें सलाहियत ही नहीं, न उसने पानी को रोका, न चारा जमा, तो पहले हिस्से की मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने दीन में समझ हासिल की और उस इल्मो हिदायत से जो मैं लाया हूं खूब नफा उठाया, सीखा और सिखाया, और आखरी हिस्से की मिसाल उन लोगों की तरह है जिन्होंने मेरी लाई हुई हिदायत को सुन कर कुबूल करना तो दूर सर भी न उठाया। (बुखारी—मुस्लिम)

एक आदमी की हिदायत भी अपार धन है–

हज़रत साहिल बिन सअ़द रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारे द्वारा एक आदमी को भी हिदायत दे दे तो वह तुम्हारे लिए सुर्ख (लाल रंग के) ऊँटों से बेहतर है। (सुर्ख ऊँट अरब में कम पाये जाते थे इसलिए उनकी बड़ी कीमत लगती थी)।

(बुखरी मुस्लिम)

तबलीगो दावत का हुक्म–

इल्म की तलब में निकलना खुदा की राह में निकलने के बराबर हैः–

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो आदमी इल्मे दीन हासिल करने के उद्देश्य से घर से निकले तो जब तक वह घर वापस न होगा उसका यह ज़माना अल्लाह तआला के रास्ते में गिना जायेगा। (तिर्मिजी)

मुअल्लिम (टीचर) के लिए दुआ़यें:–

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया आलिम की फज़ीलत आबिद पर ऐसी है जैसे मेरी फजीलत तुम में से कम दर्जे वाले पर, फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआ़ला, उसके फरिश्ते, और आसमानों ज़मीन वाले, यहां तक कि चीटियां अपने बिलों में, मछलियां पानी में, भलाई की तालीम देने वालों (यानी इल्मे दीन सिखाने वालों) के लिए दुआ़यें करती हैं। (तिर्मिजी)

तालिबे इल्म का सम्मानः–

हज़रत अबू दर्दा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने इल्म की खोज में सफर किया उस पर अल्लाह तआला जन्नत का रास्ता आसान फरमायेगा और फरिश्ते इल्मे दीन के हासिल करने वाले से खुश हो कर अपने पर बिछा देते हैं और जो आसमानों जमीन में है यहां तक कि मछलियां पानी में आलिम के लिए दुआयें करती हैं और आलिम की फजीलत आबिद पर ऐसी है जैसे चांद को तमाम सितारों पर, और उलमा नबियों के वारिस होते हैं और अंबिया किसी को दीनार दिरहम का वारिस नहीं बनाते बल्कि इल्म का वारिस बनाते हैं, तो जिस ने इल्म हासिल किया उसने अपनी खुश क़िस्मती से पूरा हिस्सा हासिल कर लिया। (अबू दाऊद– तिर्मिजी)

मुबल्लिग (प्रचारक) के लिए आप सल्ल0 की दुआः–

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआ़ला उस आदमी को आबाद करे जो मेरी बात को हू बहू पहुंचा दे, शायद सुनने वाला जियादा याद रखने वाला हो।

(तिर्मिजी)

दीन की बात न बताने वाले की सज़ाः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिससे दीन की किसी बात के बारे में प्रश्न किया गया और उसने (मालूम होने के बावजूद) नहीं बताया तो कियामत के दिन उसको आग की लगाम दी जायेगी। (अबू दाऊद–तिर्मिजी)

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

हज़रत मौलाना मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रहमतुल्लाहि अलैहि की याद में

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अगर गीती कसे पायन्दा बूदे
अबुल्क़ासिम मुहम्मद ज़िन्दा बूदे

अर्थात इस सांसारिक जीवन में कोई सदैव रहता तो अबुल क़ासिम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जीवित रहते!

अल्लाह तआला सूचित करते हैं कि ''हर जीव को मौत का मज़ा चखना है और तुम को तुम्हारे कर्मों का पूरा पूरा बदला तो कियामत ही में मिलेगा पस जो जहन्नम की आग से बचा दिया जायेगा और उसको जन्नत में प्रवेश मिल जाएगा वही सफल होगा और यह सांसारिक जीवन तो बस माया जाल है धोखे की टट्टी है'' । (3:185)

हम सब अल्लाह की मिल्क हैं (इन्ना लिल्लाहि) और हम सब उसी की ओर लौट जाने वाले हैं। (वइन्नाइलैहि राजिऊन)। (2:156)

हमारे हज़रत मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 के लौट जाने का वक़्त 16 जनवरी 2019 ई0 को आ गया था। वह ईमान के साथ अपने रब की रहमत की ओर लौट गए। निश्चित रूप से हम विश्वास रखते हैं कि मौलाना इल्लीयीन के उच्च स्थान पर आराम कर रहे हैं अब हम उनकी याद में और उनकी याद बाक़ी रखने के लिए उनके विषय में कुछ लिखना चाहते हैं, अल्लाह हमारी मदद करे।

मौलाना की लोक–प्रियता का अनुमान उनके जनाज़े की नमाज़ और दफ़्न करने की भीड़ से लगाया जा सकता है। पहली जनाज़े की नमाज़ नदवतुल उलमा की फील्ड में मोहतमिम दारुल उलूम मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी ने पढ़ाई जिसमें कई हज़ार नमाज़ी थे। दूसरी नमाज़े जनाज़ा तकिया कलां रायबरेली में हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे हसनी मद्दज़िल्लुहू ने पढ़ाई, इस नमाज़ में नमाज़ियों की बहुत बड़ी भीड थी तदफीन में इतनी भीड़ थी कि मग़रिब बाद से 10 बजे तक बूढ़े लोग मिट्टी न डाल सके।

हज़रत मौलाना पर उनके हम अ़स्र (समकालीन) उलमा और घर वालों और उनके लाइक़ व फ़ाइक़ योग्य शागिर्दों ने बहुत कुछ लिखा है और लिखेंगे जो उर्दू पत्रिका तामीरे हयात और दूसरे पर्चों में प्रकाशित हुआ है और प्रकाशित होता रहेगा, और मुझे यक़ीन है कि मौलाना महमूद हसनी नदवी उनकी जीवनी भी उर्दू में लिखेंगे। मैं उन मालूमात पर कोई इज़ाफ़ा नहीं कर सकता हूं मगर मैं कुछ ज़ाती तअ़ल्लुक का वर्णन कर के उनको श्रद्धांजली अरपित करना चाहता हूं।

हज़रत मौलाना अल्लाह वाले बुज़ुर्ग रशीद मियां रह0 के साहिबज़ादे थे। जब मैं रिज़वान दफ़्तर में बैठता था और वह रायबरेली से तशरीफ

लाते तो मेरे पास बैठते थे और मेरी खैरियत बड़े दिलचस्प अन्दाज़ में पूछते।

हज़रत मौलाना वाज़ेह साहब रह0 हमारे मख़्दूम हज़रत मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह0 के छोटे भाई थे मौलाना मुहम्मद सानी रह0 से मेरी जान पहचान सन् 1958 से थी जब वह एक तब्लीगी दौरे में अलीआबाद गये थे पहली मुलाक़ात उसी वक्त हुई थी, लेकिन बाक़ाइदा करीबी तअल्लुक़ उस वक्त हुआ जब मैंने रिज़वान दफ़्तर में पार्ट टाइम काम शुरु किया उसी वक्त मौलाना वाजेह रह0 से भी तअल्लुक़ हुआ यह सन् 1962 की बात है। उस वक़्त मैं नदवतुल उलमा की तरफ़ से तब्लीगी मरकज़ वाली मस्जिद के मकतब में मुदर्रिस था।

माहनामा उर्दू मासिक पत्रिका रिज़वान के प्रकाशन तथा पोस्टिंग का काम मेरे सिपुर्द था, रिज़वान का कवर मौलाना वाज़ेह रह0 द्वारा देहली में छपता था, इसलिए मेरा तअल्लुक मौलाना वाजेह रह0 से था। मौलाना वाज़ेह रह0 मेरे पीर व मुर्शिद मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी, नाज़िम नदवतुल उलमा के छोटे भाई थे।

हज़रत मौलाना वाज़ेह रह0 हमारे फिरिश्ता सिफत बुजुर्ग डॉ0 अब्दुल अली रहमतुल्लाह अलैहि के भांजे और दामाद थे।

हज़रत मौलाना रह0 हमारे मखदूम हज़रत मौलाना अली मियां रहमतुल्लाहि अलैहि के भांजे थे।

हज़रत मौलाना रह0 हमारे मखदूम ज़ादे मुहतरम मौलाना हम्ज़ा मियां के चचा थे।

हज़रत मौलाना रह0 हमारे अज़ीज़े मुकर्रम मौलाना जाफ़र हसनी नदवी एडीटर अर्राइद के वालिदे मुहतरम थे कहां तक रिश्ते गिनाऊं, अभी दर्जन भर नाम बाक़ी हैं जो मेरे मुहतरम अज़ीज़ और मौलाना से उनका खास तअल्लुक़ था। अल्लाह उनकी बाल बाल मग़फिरत फरमा कर दरजात बुलन्द करे और अल्लाह तआला से दुआ है कि मुझे ईमान के साथ उठा कर मुझ को उन से और दूसरे सालिहीन से मिला दे जैसा कि हज़रत युसुफ़ अलैहिस्सलाम ने दुआ मांगी थी कि ऐ अल्लाह मुझे इस्लाम की हालत में वफ़ात दे और सालिहीन से मिला दे।

हज़रत मौलाना बहुत कम बोलते थे मौलाना अली मियां रह0 का खान्दान लखनऊ में गोइन रोड पर मुहम्मद अली लाइन के पास एक किराये के मकान में था उस के क़रीब मस्जिदे नवाज़ी जिसे पकड़या वाली मस्जिद भी कहते हैं मैं उसमें कई सालों तक इमाम रहा। मौलाना का पूरा परिवार उसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ता था। जब मौलाना वाज़ेह रह0 देहली से आते तो नमाज़ पढ़ने मस्जिद आते मैं बहुत कहता मगर वह इमामत न करते, मौलाना अपने तक़्वे की बिना पर इमामत से ज़िन्दगी भर दूर रहे।

शेष पृष्ठ...27 पर

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

दीन व शरीअत के बारे में नबियों की ग़ैरत व अडिगताः– दावत की हिकमत (युक्ति)–

इसका मतलब यह नहीं कि नबी दावत व तबलीग़ के सिलसिले में हिकमत से काम नहीं लेते। और लोगों से उनकी समझ के अनुसार बात नहीं करते। ऐसा नहीं है। यह तो कुर्आन की आयतों और पाक सीरत की बीसियों घटनाओं के विपरीत है।

अनुवादः– *और हम ने जो भी रसूल भेजे, उनकी अपनी क़ौम की भाषा के साथ भेजा, ताकि उन्हें स्पष्ट तरीके से (अल्लाह के आदेशों को) बयान करे। (सूरः इब्राहीम 4)*

भाषा का भावार्थ यहां कुछ वाक्यों और शब्दों में सीमित नहीं। वह शैली और समझने के ढंग सब पर हावी है। इसका आकर्षक नमूना हज़रत यूसुफ के जेल में अपने दोनों साथियों से नसीहत (उपदेश) हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के अपनी– अपनी कौम और अपने अपने दौर के बादशाहों से संवाद में नज़र आता है। अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में यह हिदायत दी है।

अनुवादः– *ऐ पैग़म्बर लोगों को हिकमत से और अच्छी नसीहत से अपने 'रब' की राह की ओर बुलाइए और उनके साथ तर्क–वितर्क अच्छे तरीक़े से कीजिए। (सूरः अं–नहल 125)*

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा (मित्रों) को जब इस्लाम के प्रचार व प्रसार के लिए रवाना करते तो नर्मी, स्नेह और आसानी पैदा करने और खुशख़बरी देने का निर्देश देते। आपने हज़रत मआज पुत्र जबल और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अनहुमा को यमन भेजते हुए वसीयत की "आसानी पैदा करना सख़्ती न करना, खुशख़बरी देना, वहशत इख़्तियार करने वाला न बनना और खुद अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करते हुए कहा–

अनुवादः– *ऐ मुहम्मद अल्लाह की रहमत से आपका स्वभाव उन लोगों के लिए नर्म है, और अगर आप तेज मिज़ाज (क्रूर स्वभाव), सख़्त दिल होते, तो यह आपके पास से भाग जाते। (सूरः आले इमरान 156)*

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा से सामान्यता कहा तुम्हें आसानी पैदा करने के लिए उठाया गया है, कठिनाई पैदा करने के लिए नहीं उठाया गया है। (बुख़ारी शरीफ़)

पवित्र कुर्आन अनेक नबियों का उल्लेख करते हुए कहता है–

अनुवादः– *यह ऐसे लोग थे जिनको हमने किताब और हुक्म (निर्णायक राय स्थापित करने की योग्यता) और नबूवत दी थी।*

(सूरः अज़ अनआम 89)

शेष पृष्ठ...31 पर

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी रह0 —अनुवादः अतहर हुसैन

तीसरे ख़लीफा हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि0 का वर्णन

हज़रत उस्मान रज़ि0 को जनसेवा से जो रुचि थी उसका हाल किसे नहीं मालूम, ख़िलाफ़त से पहले उनकी दौलत लोगों की आवश्यकताओं पर व्यय होती रहती थी। मदीना मुनव्वरा में मीठे पानी की कमी थी, अच्छे अच्छे कुएं यहूदियों के क़ब्ज़े में थे। उन लोगों की धन के प्रति लोभ तथा लिप्सा प्रसिद्ध है, मुहाजिरों तथा अंसारियों को पानी मिलने में बड़ी कठिनाई होती थी, यह देख कर हज़रत उस्मान रज़ि0 ने एक बड़ी रक़म दे कर मदीना का प्रसिद्ध कुआं ख़रीद लिया और जन साधारण के हित के लिए उसे वक़्फ़ (धर्मार्थ दान) कर दिया।

जन साधारण की रक्षाः–

एक बार मदीना मुनव्वरा में ख़बर आई कि रूमीं सम्राट बेशुमार फ़ौजों के साथ मदीना पर आक्रमण करना चाहता है। बड़े संकट का समय था। रूमियों का भय शताब्दियों से अरबों के हृदय में समाया हुआ था। इस सूचना से पहले लोगों में बड़ी बेचैनी फैल जाती थी। परन्तु इस्लाम ने मौत का भय दिल से निकाल दिया था अब मुसलमान खुदा की राह में हर समय जान देने की चाह रखते थे। अतः इस समय घबराने के बजाय उन्होंने वीरता तथा साहस से काम लिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज्ञानुसार रूमी सीमा की ओर बढ़ कर सामना करने का निश्चय कर लिया, परन्तु इतनी लम्बी यात्रा और ऐसे घोर संग्राम के लिए बहुत बड़ी धनराशि की आवश्यता थी। इस अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों से आर्थिक सहायता की अपील की। हज़रत उस्मान रज़ि0 ने इस आदेश के पालन में इतनी बड़ी धनराशि प्रस्तुत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्रसन्न हो कर कहा, "इसके बाद हज़रत उस्मान रज़ि0 कुछ भी करें उनसे कोई पूछ—गछ नहीं है।

❖❖❖

अनुरोध

प्रिय पाठकों से अनुरोध है कि मार्च के अंक के कवर पेज पर "गी" का इमला पांच जगह ग़लत छप गया है, उसको ठीक कर लें यह गलती डिजाइनर की ना समझी से हुई है। कृप्या छमा करें।

(सम्पादक)

वास्तविक सफलता दीने इस्लाम में है

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी —हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

पूरा मानवीय इतिहास हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से ले कर आज तक मानवीय मान्यताओं तथा गुणों के प्रसारण के प्रयासों से भरा हुआ है, मनुष्य ने लगातार ज्ञान तथा सुशीलता के प्राप्ति के लिए अनथक प्रयास किये हैं, ताकि वह प्रेम तथा मित्रता के वातावरण में जीवन बिता सके तथा उपकार एवं संयम के आधार पर एक दूसरे का सहयोग कर सके, निःसंदेह पारस्परिक सहयोग समस्त सामाजिक यूनिटों में शांतिमय जीवन के लिए मौलिक स्थिति रखता है, और पारस्परिक सहयोग न होने से उपद्रव तथा अव्यवस्था का वातारण बनता है और समाज आनन्द रहित हो जाता है, इससे ज्ञात हुआ कि कोई भला समाज पारस्परिक सहयोग से खाली नहीं रह सकता, व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन में पारसपरिक सहयोग से अनेकों बड़े—बड़े काम हो जाते हैं। परन्तु ज्ञात रहे कि सहयोग सत्य के लिए है तो उसके अच्छे परिणाम मिलेंगे तथा सहयोग असत्य के लिए है तो बुरे परिणाम प्राप्त होंगे, अल्लाह तआला ने इसकी उपमा भले कलिमे और बुरे कलिमे से दी है। अनुवादः ''अच्छे कलमे की मिसाल पाकीज़ा दरख़्त (पवित्र वृक्ष) से दी है, जिसकी जड़ें ज़मीन में पैवस्त हों और शाखाऐं आसमान से बातें कर रही हों, वह अपना फल हर फसल में अपने परवरदिगार के हुक्म से देता रहता हो, और अल्लाह लोगों के लिए तम्सीलात इसलिए बयान करता है ताकि वह खूब समझ लें और गन्दे कलिमे की मिसाल ऐसी है जैसे एक गन्दा दरख़्त हो कि वह ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाये और उसे कुछ भी सबात (स्थिरता) न हो''।

(इब्राहीमः 24—26)

हर प्रयास में तथा हर कार्य में गंभीरता, आत्म सम्मान तथा स्वाभिमानता ही में उसकी सफलता की गारण्टी है और अगर प्रयास में गंभीरता आदि नहीं है तो उसके परिणाम में अव्यवस्था तथा बिखराव अवश्य उत्पन्न होगा, अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन में वर्णित किया है— अनुवादः ''और यह कि मनुष्य के लिए बस वही है जिसके लिए उस ने प्रयास किया, और यह कि उसका प्रयास शीघ्र ही दिख जाएगा, फिर उसे पूरा बदला दिया जायेगा।''

(अन्नज्मः 39—41)

यही कारण है कि जिसने अल्लाह की चाहत के अनुकूल जीवन बिताया और पूरे जीवन को अल्लाह को अर्पित कर दिया और जिसने सांसारिक धन तथा सम्पत्ति को आखिरत के पुरस्कारों पर वरीयता दी वह दोनों

बराबर नहीं हो सकते, अल्लाह तआला पवित्र कुर्आन में कहता है, अनुवाद ''तो जिस किसी ने सरकशी की और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी होगी, तो निस्संदेह भड़कती आग ही उसका ठिकाना है, और रहा वह व्यक्ति जिसने अपने रब के सामने खड़े होने का भय रखा और अपने जीवन को बुरी इच्छा से रोका, तो जन्नत ही उसका ठिकाना है'' । (अन्नाज़िआतः 39—41)

सूरे नज्म की आयत में ''इन्सान'' (मनुष्य) का शब्द, प्रयोग किया गया है उससे ज्ञात हुआ कि मनुष्य सृष्टि में अल्लाह तआला की महान प्राणी है इसी के इर्द गिर्द धरती तथा आकाश का संपूर्ण प्रबन्ध घूम रहा है, अल्लाह तआला ने मनुष्य को जन्म दिया और उस के जीवन के लिए भांति भांति के साधन प्रदान किये तथा जीवनयापन के लिए एक विधान भी प्रदान किया, जो व्यक्ति उस विधान के अनुकूल जीवन बिताएगा और पवित्र कुर्आन के आदेशों के अनुकूल उस का जीवन होगा तो उसको हर स्थान में तथा हर काल में स्थाई सफलता प्राप्त होगी, इसके प्रतिकूल यदि उसको सांसारिक चमक दमक ने धोखे में रखा है, और वह अल्लाह तआला के परुस्कारों को समझ न सका और अल्लाह तआला की कृपा तथा दया से दूर रहा तथा उसने अपनी बुद्धि को भी काम में न लाया तो उसको हर पद पर असफलता का सामना करना पड़ेगा। मानवीय अस्तित्व वास्तव में सृष्टि के स्वामी के निर्णय तथा कृपा से है, अल्लाह तआला ने मनुष्य को मर्द तथा औरत के मिश्रित वीर्य से जन्म दिया, फिर उसको सुन्ने वाला, देखने वाला तथा ज्ञान रखने वाला बनाया ताकि उसकी परीक्षा ले अल्लाह तआला का इरशाद है, अनुवादः ''हमने मनुष्य को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया, ताकि उसको जांचे, फिर हमने उसे सुनने और देखने वाला बना दिया, हमने उसे मार्ग दिखाया, अब चाहे वह कृतज्ञ (शुक्र गुज़ार) बने या अकृतज्ञ (नाशुक्रा)।

सूरः अद—दहरः 2—3)

मनुष्य का जन्म इस भौतिक संसार में मर्द तथा औरत के द्वारा हुआ और उस को मानवता से सुसज्जित किया गया वह सुनने तथा देखने की शक्ति रखता है और यही शक्ति उसके लिए सम्मान तथा उपकार के मार्ग बनाती है, अतएव मनुष्य या तो अल्लाह का शुक्रगुज़ार होता है या नाशुक्रा बनता है, सय्यिद कुतुब शहीद अपनी तफ़्सीर ''ज़िलालुल कुर्आन'' में इस वास्तविकता की ओर संकेत करते हुए लिखते हैंः ''अल्लाह ने इन्सान को सुनने और देखने वाला बनाया, यानी इसको ऐसे वसाइल (साधन) देखने और समझने के लिए दिये हैं जिनके द्वारा वह ज्ञान तथा जानकारियां प्राप्त कर सकता है और संसार की वस्तुओं के गुणों का पता लगा कर उनसे लाभ उठा सकता है, अल्लाह तआला ने इस मानव प्राणी में अनगिनत विशेषताएं छुपा रखी हैं यह कोई सामयिक अध्ययन की

बात नहीं अपितु संपूर्ण ज्ञान वाले अल्लाह का बनाया हुआ निज़ाम है''।

यह संसार परिक्षा स्थल है, अल्लाह तआला ने यह परीक्षा इसलिए रखी है, ताकि ज्ञात हो जाय कि कौन उस का आज्ञाकारी है और कौन अवज्ञाकारी, इसी हक़ीक़त को सूरतुल–अस्र में इस प्रकार बयान किया गया है अनुवादः ''कसम है ज़माने की कि इन्सान घाटे में है सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाये, और नेक अमल किये और हक़ की एक दूसरे को तलक़ीन की और सब्र की नसीहत की'' और सूरे मआरिज में यह अल्फ़ाज़ आये हैं– अनुवादः ''निःसंदेह मनुष्य अधैर्य (बे सब्रा) पैदा हुआ है। जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है तो घबरा उठता है। (हाय हाय करता है) किन्तु जब उसे सम्पन्नता (खुशहाली) प्राप्त होती है तो वह कृपणता (कंजूसी) दिखाता है। किन्तु नमाज़ अदा करने वालों की बात और है। जो अपनी नमाज़ पर सदैव जमे रहते हैं। और जिनके मालों में मांगने वालों और वंचित का एक ज्ञात और निश्चित हक़ होता है''।

(अल मआरिजः 19–25)

और सूरे बनी इस्राईल में आया है, अनुवादः ''मानव पर जब हम सुखद कृपा करते हैं तो वह मुंह फेरता और अपना पहलू बचाता है। किन्तु जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है, तो वह निराश होने लगता है''।

(बनी इस्राईलः 83)

और अल्लाह तआला ने शैतान की गुमराहियों का तज़करा करते हुए फरमाया है, अनुवादः ''इनकी मिसाल शैतान जैसी है कि जब उसने मनुष्य से कहा ''कुफ्र कर'' फिर जब वह कुफ्र कर बैठता है तो कहने लगा ''मैं तुम्हारी जिम्मेदारी से बरी हूं। मैं तो सारे संसार के रब अल्लाह से डरता हूं''।

(अल हश्रः 16)

और अल्लाह तआला इन्सान के मिज़ाज में आने वाली तब्दीलियों का जिक्र इस तरह फरमाता है, अनुवादः ''किन्तु मनुष्य का हाल यह है कि जब उसका रब इस प्रकार उसकी परीक्षा करता है कि उसे प्रतिष्ठा (इज्ज़त) और नेमत प्रदान करता है, तो वह कहता है ''मेरे रब ने मुझे प्रतिष्ठित (इज़्ज़त वाला) किया''। किन्तु जब कभी वह उसकी परीक्षा इस प्रकार करता है कि उसकी रोज़ी नपी तुली कर देता है, तो वह कहता है ''मेरे रब ने मेरा अपमान किया''। (अल फज्रः 15–16)

दुन्या के इतिहास में मानव जाति की अनेकों श्रेणियां तथा जमाअतें पाई गई हैं उनमें कुछ ऐसी हैं जो अपने उद्देश्य को भुला बैठी थीं और अज्ञानता तथा पस्ती की खाई में पड़ी थीं, न उनको अपने उज्जवल भविष्य के निर्माण की चिनता थी और न आखिरत का ख्याल था, उन्हीं जमाअतों और श्रेणियों (तबक़ात) के सुधार के लिए अल्लाह के नबी आते रहे, उन्होंने मानव जाति को अल्लाह से जोड़ा और उसको अपना वास्तविक रचयता (ख़ालिक़) तथा स्वामी मानने का पाठ पढ़ाया, इस काम के लिए उन्होंने अपने

को वक़्फ़ (अर्पण) कर दिया, अतएव जिन के भाग्य में हिदायत थी वह ईमान लाये और जिन्होंने उनसे अपने आप को दूर रखा वह गुमराह (पथ भ्रष्ट) हुए।

सबसे आखिर में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंतिम नबी बन कर आये, उन की जात सरापा रहमत (पूर्णता करुणा) थी, और पूरी मानव जाति के लिए नबी बना कर भेजे गये, उनको इस्लाम की पूर्ण शिक्षाएं प्रदान की गईं, और दीने इस्लाम को पूर्ण रूप में मानव के समक्ष प्रस्तुत किया गया, तथा उसको सार्वजनिक करने के लिए ऐसी उम्मत पैदा की गई जो खैरे उम्मत करार पाई। उसका मिशन यह है कि वह भलाई का मशवरा देती है, और बुराई से रोकती है और अल्लाह पर ईमान रखती है।

आदर्श मानव बनाने के लिए ऐसी संस्थाओं और तालीमगाहों की बड़ी सख़्त आवश्यकता है जो सकारात्मक विधि से अल्लाह के नबियों के तरीक़े पर पथ प्रदर्शन कर सके, यह संस्थाएं (इदारे) केवल शिक्षण के साधन न होंगे, अपितु अपने क्षेत्रों की तरबीयत और इस्लाह (प्रशिक्षण तथा सुधार) करके एक अनुकर्णीय (काबिले तक़्लीद) समाज अस्तित्व में लायेंगे, और उम्मत को पिछली प्रतिष्ठा पर वापस लाने का काम करेंगे तथा सार्वजनिक जागरूकता का काम करेंगे।

अल्लाह का शुक्र है कि इस्लामी मदरसे और दीनी इदारे दुन्या के कोने कोने में क़ाइम हैं, उनके द्वारा यह भव्य तथा उत्तम कार्य पूरा हो रहा है, बीते कालों में भी यह काम इन्हीं मदरसों द्वारा होता रहा है, इस्लामिक चिन्तक मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 ने जयपुर में 1976 ई0 में अपने एक खिताब (भाषण) में फरमाया था "जब मानवता पर पतन का प्रभाव हुआ, जब नैतिकता पर पतन का प्रभाव हुआ, और जब लोगों को यह नज़र आने लगा कि जो यह सत्य तथा असत्य की बात कही जाती है, यह केवल कहानी की पूर्ति तथा उसकी सजावट के लिए कही जाती है। परन्तु उस का अस्तित्व कहीं नहीं है, सत्य असत्य कुछ नहीं है, हलाल व हराम कोई चीज़ नहीं है, कुफ्र व ईमान कोई चीज़ नहीं, गलत सहीह कोई चीज़ नहीं है, अस्ल चीज़ तो पैसा है, अस्ल चीज़ तो ताक़त (शक्ति) है, अस्ल चीज़ ओहदा (पद) है, अस्ल चीज़ तो मवाके (अवसर) हैं, उस वक़्त मदरसे ने ऐसे लोग पैदा किये, कोई ऐसा आदमी ला खड़ा कर दिया, ऐसा उच्च मनुष्य, ऐसा पहाड़ जैसा इन्सान, जिसने कहा "कुछ नहीं हम नहीं जानते और अगर किसी को एतिबार नहीं आता तो हमें खरीद कर देख ले, अगर वह हमें खरीद सकता है तो हम मान लेंगे कि दुन्या में अख़्लाक़ियात (नैतिकता) कोई चीज़ नहीं, और उन सब पर ज़वाल (पतन) आ गया है। ज्ञात रहे कि मदरसे ने ऐसे ही लोग पैदा किये हैं"।

शेष पृष्ठ...25 पर

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अन्हु के कुछ हालात

—हज़रत मौलाना तक़ी उस्मानी
—हिन्दी इम्ला: अब्दुल्लाह मतलूब

हज़रत मुआविया रज़ि0 ज़ाहिरी तौर पर फत्हे मक्का के मौक़े पर ईमान लाये मगर दर हक़ीक़त आप उससे क़ब्ल ही इस्लाम क़बूल कर चुके थे लेकिन बाज़ मजबूरियों की बिना पर ज़ाहिर न किया था, अपने इस्लाम को छुपाये रखने और फत्हे मक्का के मौक़े पर ज़ाहिर करने की वजह खुद हज़रत मुआ़विया रज़ि0 ने बयान की, चुनांचि फाज़िल मुअर्रिख इब्ने सअ़द का बयान है कि, हज़रत मुआविया रज़ि0 फरमाया करते थे कि मैं उमरतुल—क़ज़ा से पहले इस्लाम ले आया था, मगर मदीना जाने से डरता था क्योंकि मेरी वालिदा (हिन्दा) कहा करती थीं कि अगर तुम गये तो तुम्हारी ज़रूरी इखराजाते ज़िन्दगी देना भी बन्द कर देंगे, इसी उज़्र और दूसरी मजबूरियों कि बिना पर आप (रज़ि0) ने अपने वालिद के हमराह फत्हे मक्का के मौक़े पर अपने इस्लाम लाने का ऐलान किया यही वजह है कि हम देखते हैं कि बद्र, उहुद व खन्दक़ और हुदैबिया में आप कुफ़्फ़ार की जानिब से शरीक़ ना हुए हालांकि उस वक्त आप जवान थे, आप के वालिद अबू सुफियान सालार की हैसियत से शरीक हो रहे थे और आप के हम उम्र जवान बढ़ चढ़ कर मुसलमानों के ख़िलाफ जंग में हिस्सा ले रहे थे, इन तमाम बातों के बावजूद आप का शरीक़ न होना ज़ाहिर करता है कि इस्लाम की हक़्क़ानियत इबतिदा ही से आप के दिल में घर कर चुकी थी। इस्लाम लाने के बाद आप मुस्तकिलन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लगे रहे और आप उस मुक़द्दस जमाअ़त के एक रुक्ने रकीन थे जिसे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किताबते वही के लिए मामूर फरमाया था, चुनांचि जो वही आप पर नाज़िल होती उसे क़लमबन्द फरमाते और जो खुतूत व फरामीन, सरकारे दोजहां के दरबार से जारी होते उन्हें भी तहरीर फरमाते, वहीये खुदावन्दी लिखने की वजह से आप को कातिबे वही कहा जाता है, अल्लामा इबने हज़्म रह0 लिखते हैं कि नबीये करीम के कातिबीन में सबसे ज़ियादा हज़रत ज़ैद बिन साबित आप की ख़िदमत में हाज़िर रहे और उसके बाद दूसरा दर्जा हज़रत मुआविया रज़ि0 का था, ये दोनों हज़रात दिन रात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ लगे रहते और इसके सिवा कोई काम न करते थे। हुजूर के ज़माने में किताबते वही का काम जितना नाज़ुक था और उसके लिए जिस

एहसासे– ज़िम्मेदारी अमानत व दयानत और इल्म व फहम की ज़रूरत थी वह मोहताजे बयान नहीं, चुनांचि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में मुसलसल हाज़िरी, किताबते वही, अमानत व दयानत और दीग़र सिफाते महमूदह की वजह से नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुतअ़द्दिद बार आपके लिए दुआ फरमाई, फरमाया, तर्जुमाः ''ऐ अल्लाह मुआविया को हिदायत देने वाला और हिदायत याफ़्ता बना दीजिए और इसके ज़रिये से लोगों को हिदायत दीजिए'' एक और हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आप को दुआ़ दी और फरमायाः तर्जुमा ''ऐ अल्लाह मुआ़विया को हिसाब किताब सिखा और इसको अ़ज़ाबे जहन्नम से बचा'' मशहूर सहाबी हज़रत अम्र बिन अल–आस बयान करते हैं कि मैंने नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ये फरमाते सुना तर्जुमाः– ''ऐ अल्लाह मुआविया को हिसाब किताब सिखला दे और शहरों में इसके लिए ठिकाना बना दे और इस को अज़ाब से बचा ले।

नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आप की इमामत व खिलाफत की अपनी हयात में ही पेशीन गोई फरमा दी थी और इसके लिए दुआ़ भी फरमाई थी, जैसा कि हदीसों से ज़ाहिर है, नीज़ हज़रत मुआविया खुद भी बयान करते हैं कि एक बार मैं नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वास्ते वुज़ू का पानी ले कर गया, आप ने पानी से वुज़ू फरमाया और वुज़ू करने के बाद मेरी तरफ़ देखा और फरमाया ''ऐ मुआविया अगर तुम्हारे सुपुर्द इमामत की जाये और तुम्हें अमीर बना दिया जाए तो तुम अल्लाह से डरते रहना और इन्साफ़ करना'' और बाज़ रिवायत में है कि इसके बाद आपने फरमाया ''जो शख़्स अच्छा काम करे उसकी तरफ तवज्जुह करना और महरबानी करना और जो कोई बुरा काम करे उससे दरगुज़र करना'' हज़रत मुआविया रज़ि0 इस हदीस को बयान करने के बाद फरमाते हैं ''मुझे आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस फरमान के बाद ख़याल लगा रहा कि मुझे ज़रूर इस काम में आज़माया जाएगा चुनांचि ऐसा ही हुआ ''मुझे अमीर बना दिया गया है इन रिवायात से साफ वाज़ेह है कि हज़रत मुआ़विया रज़ि0 को दरबारे नबवी में क्या मरतबा हासिल था? और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे कितनी महब्बत फरमाते थे? एक रिवायत में है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सवारी पर सवार हुए और हज़रत मुआविया रज़ि0 को अपने पीछे बिठाया थोड़ी देर बाद आपने फरमाया ''ऐ मुआविया! तुम्हारे जिस्म का कौन सा हिस्सा मेरे जिस्म के साथ मिल रहा है, उन्होंने अर्ज़ किया कि, ''या रसूलुल्लाह मेरा पेट और सीना आपके जिस्म मुबारक के साथ मिला हुआ है, ये सुन

शेष पृष्ठ...25 पर

हमारी सफलता नबी सल्लल्लाहु अहैलि व सल्लम के अनुकरण में निहित है

–मौलाना सय्यिद मुहम्मद हम्ज़ा हसनी नदवी

–हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

हमारे देश की जो दशा इस समय हो गई है वह किसी से छुपी हुई नहीं है, जो देश एक लम्बे समय से शान्ति तथा शरण का देश था वह अब उपद्रव, अव्यवस्था तथा पारस्परिक घृणा का स्थल बन चुका है और अब इस देश की यह दशा हो चुकी है कि कोई व्यक्ति इस बात की गारन्टी नहीं दे सकता कि कोई अगर घर से बाहर निकले तो सुरक्षित वापस आ सकता है जंगल में जंगली हिंसकों के बीच तो आदमी सुरक्षित रह सकता है परन्तु शहरों में, आबादियों में उसके प्राण तथा उसका माल सुरक्षित रहे इस की कोई गारन्टी नहीं।

इन परिस्थितियों में हमारा क्या स्वभाव होना चाहिए और इन जटिल समस्याओं से भरे काल से किस प्रकार उबरना चाहिए, यह बहुत ही ध्यान देने तथा चिन्तन करने की बात है। भावनाओं से अलग हो कर तथा मस्तिष्क से सामयिक उत्तेजना निकाल कर इन कठिन समस्याओं का समाधान अत्यावश्यक है।

कोई भी निर्णय लेने से पहले हम को संसार के दूसरे देशों की परिस्थतियों का गहराई से निरीक्षण करना चाहिए कि उन देशों के मुसलमान किन हालात से दोचार हैं (किन परिस्थितियों में ग्रस्त हैं) उन को सामने रखना चाहिए, क़ौमों के जीवन में एक साधारण पग भी असाधारण प्रभाव रखता है तथा उसके दूरगामी और ऐतिहासिक प्रभाव होते हैं, वह क़ौम कदापि उन्नति नहीं कर सकती जो बुद्धि से काम न ले। इस सिलसिले में हमारे लिए फिर हमारे पूर्वजों का उज्जवल उदाहरण है जिन्होंने इस से भी अधिक कठिन परिस्थितियों में जीवन बिताया है तथा आपत्त्यिों और अंधेरियों में खुदाई दीप बन कर न केवल स्वयं के लिए अपितु दूसरों के लिए प्रकाशवान स्तम्भ सिद्ध हुए।

इस बात को भली भांति समझ लेना चाहिए कि इन हालात में सबसे बड़ी जिम्मेदारी हमारी है, हम इस परिस्थिति को बदलें, अपने जीवन चरित्र को बदलें तथा उसको इस्लाम के ढांचे में ढाल कर सर्वथा प्रेम बन जायें तथा इस्लाम का संदेश हर व्यक्ति तक पहुंचायें और यह सिद्ध करें कि इस्लाम ही एक ऐसी विषहर औषधि है जो हर प्रकार के विष का अन्त कर सकता है, और इसी की छाया में मानवता जीवित रह सकती है। समस्त संसार के लिए सर्वथा दयालुता वाले नबी की पवित्र जीवनी का आदर्श हमारे सामने है। अगर हम इस आदर्श को अपने सामने रख कर अपना जीवन नहीं बितायेंगे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुकरण

शेष पृष्ठ...21 पर

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सहाबा रिजवानुल्लाहि अलैहिम अज़मईन भी हमारे मुताअ़ व मुकतदा हैं

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

मुताअ़ उसे कहते हैं जिसके पीछे चला जाये, जिस का अनुकरण किया जाये, मुकतदा का अर्थ भी लगभग वही है जो मुताअ़ का अर्थ है हिन्दी में उसे नेता भी कह सकते हैं तथा पथ प्रदर्शक भी कह सकते हैं।

रब्बुल आलमीन की तरफ़ से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा मुसलमानों को दी हुई जो शरीअत (इस्लामिक विधान) है और जीवन के कल्याण तथा भलाई के लिए जो आदेश हैं वह हम को सहा—बए—किराम (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्मान प्राप्त साथियों) ही से मिले हैं (अल्लाह उन सब से राज़ी हुआ) सहा—बए— किराम का ईमान व तक़्वा (विश्वास तथा संयम) इतना महान तथा सुदृढ़ था कि अल्लाह तआला की तरफ़ से अल्लाह के दीन को कुछ घटाए बढ़ाए बिना हर प्रकार सुरक्षित रख कर पहुंचाने के लिए उनको जरीअ़ा बनाया और उन्होंने आने वाली पीढ़ी तक उसको भली भांति पहुंचाया, इसी प्रकार हम तक जो दीन शुद्ध रूप में पहुंचा वह सहा—बए—किराम की सच्चाई निष्ठा तथा कर्तव्य परायणता ही के सबब पहुंचा, और सहा—बए—किराम का यह विश्वास अल्लाह तआला की तरफ़ से इस दीने इस्लाम के आदेश और उसका विस्तार बयान करने से ही प्राप्त हुआ और अन्तिम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सहा—बए—किराम को जो प्रेम और आस्था तथा संबन्ध था उसने हम मुसलमानों के लिए उनसे प्रेम तथा आस्था रखना अनिवार्य बना दिया। इसीलिए सहा—बए—किराम हमारे लिए नेता तथा पथ प्रदर्शक (मुतआ व मुकतदा) बने अल्लाह उन से राजी हुआ और वह अल्लाह से राज़ी हुए।

◆◇◆

हमारी सफलता..........
नहीं करेंगे तो चाहे जितने बड़े प्रदर्शन करें, बन्द मनायें, जुलूस निकालें, हम को सफलता न मिलेगी, इसलिए कि मुसलमान इस्लाम की ज़ंजीर से बंधी हुई क़ौम है जिस का सिरा (किनारा) सृष्टि के नायक समस्त संसार के लिए दया वाले अन्तिम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शुभ हाथों में है। जो इस शुभ ज़ंजीर से जुड़ा रहेगा वह सफल होगा और जो इस ज़ंजीर से अलग होगा और कोई नया मार्ग अपनायेगा वह तिरस्कृत तथा विनष्ट (रुसवा व बर्बाद) होगा। अल्लाह तआला हम सब को सीधे मार्ग पर चलने का सामर्थ्य दे। आमीन।

❖❖❖

अल्लाह की तलवार हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0

—मौलाना मुहम्मद तारिक़ नोमान —हिन्दी लिपिः उबैदुल्लाह मतलूब

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अतिप्रतिष्ठित सहाबी हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हू एक महान सेनापति और एक महान विजयी थे, युद्ध स्थल में उनकी कुशलता, दूरदर्शिता तथा लामबन्दी पर अक़्ल दंग रह जाती थी, सैनिक नेतृत्व गुणों में से कोई ऐसा गुण न होगा जो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 में न हो, वीरता व बहादुरी और हाज़िर दिमाग़ी में अद्वितीय थे। आप रज़ि0 की कुन्नीयत अबू सुलैमान और अबुल वलीद, और लक़ब सैफुल्लाह (अल्लाह की तलवार) था, आप का सिल—सि—लए नसब सातवीं पुश्त में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 से जा कर मिलता है, आप की वालिदा लुबाबतु—स्सुग़रा बिन्त अल—हारिस अल—हिलालिया थीं जो उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना बिन्त अल—हारिस और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 की वालिदा लुबाबतुल—कुबरा की बहन थीं।

आप के वालिद अल—वलीद बिन अल—मुग़ीरा कुरैश के सरदारों में से थे और मक्के के धनवानों में उनकी गणना होती थी, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 आरम्भ ही से बड़े वीर, परिश्रमी और साहसी थे, आपके पिता यद्यपि अपने क़बीले के सरदार तथा धनवान थे परन्तु ख़ालिद रज़ि0 ने उन आराम देने वाली चीज़ों को छोड़ कर परिश्रम का मार्ग अपनाया, इस्लाम का जब जुहूर हुआ तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 कबी—लए—क़ुरैश के उन लोगों में से थे जिन्होंने पैग़म्बरे—इस्लाम और अहले इस्लाम का कड़ा विरोध किया। मक्के के काफिरों ने सुल्हे हुदैबीया तक मुसलमानों के विरोध मे जितने युद्ध किये, उनमें हज़रत खालिद बिन वलीद भी शरीक़ थे। जंगे उहुद में आप मक्के के कुरैश के सवारों का नेतृत्व कर रहे थे, जब मुसलामनों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश को भुला कर पहाड़ी दर्रे के एक महत्वपूर्ण स्थान को छोड़ दिया और हार कर भागते हुए दुश्मनों को लूटने में लग गये तो हज़रत ख़ालिद ने पीछे से आक्रमण कर दिया जिससे युद्ध का पांसा पलट गया, आप हुदैबीया के मौक़े पर भी एक जंगी दस्ता लेकर मुसलमानों के विरोध में निकले थे परन्तु एक समय ऐसा आया कि आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की युद्ध की तैयारियों और आप की सूझ बूझ से ऐसे प्रभावित हुए कि उनके मन में उनका प्रेम भर गया और वह इस्लाम ले आए। और फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम पर अपने प्राण निछावर करने वालों में से हो गये।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब उमरतुल–क़ज़ा के मौक़े पर अपने सहाबा के साथ मक्के में दाख़िल हुए तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 भी उन लोगों में शामिल हो गये, जो मुसलमानों की शानो शौकत को देखने का साहस न जुटा पाने के सबब मक्के से बाहर चले गये थे। हज़रत ख़ालिद के एक भाई अल–वलीद बिन अल–वलीद रज़ि0 इस्लाम ला चुके थे, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे उमरतुल क़ज़ा के मौक़े पर खालिद बिन वलीद के बाहर चले जाने पर अफसोस जाहिर किया और उनके इस्लाम लाने को अल्लाह से दुआ की, कि या अल्लाह! ख़ालिद बिन वलीद को इस्लाम की दौलत अता कर।

हज़रत अल वलीद ने अपने भाई ख़ालिद बिन अल–वलीद को इस्लाम की दावत दी, उन्होंने जवाब दिया, मैं अपने साथियों से मशवरा करुंगा, आपने एक साथी उस्मान बिन तलहा से मशवरा किया, और दोनों इस्लाम लाने के लिए मक्के से मदीना चल दिये। हज़रत अ़म्र बिन अल–आस भी इस्लाम लाने के लिए मदीने की तरफ़ चल पड़े रास्ते में हज़रत ख़ालिद और हज़रत उस्मान बिन तलहा से मुलाक़ात हो गयी और तीनों नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंच गये। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब उन तीनों को देखा तो बहुत खुश हुए और अपने सहाबा से फरमाया मक्के वालों ने अपने दिल के टुकड़े तुम्हारे पास भेज दिये हैं, सबसे पहले हज़रत ख़ालिद रज़ि0 ने आप से बैअ़त की उसके बाद बाक़ी दोनों इस्लाम में दाखिल हो गये। हज़रत ख़ालिद रज़ि0 इस्लाम लाने के बाद नुबूवत काल, सिद्दीक़ी काल तथा फ़ारूक़ी काल में विभिन्न लड़ाईयों में इस्लामिक सेना का नेतृत्व किया। जुमादल ऊला 8 हिज्री में मूता की लड़ाई में आपने भी शिरकत की और एक के बाद एक, तीन सेनापतियों, हज़रत ज़ैद बिन हारिसा हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा और हज़रत जाफर तैयार रज़ियल्लाहु अन्हुम की शहादत के बाद इस्लामिक सेना का नेतृत्व संभाला, इस मौक़े पर पहली बार हज़रत ख़ालिद की युद्धिक कुशलता इस्लाम के काम आयी, आप कहा करते थे कि मूता कि लड़ाई में नौ तलवारें मेरे हाथ से टूट गयीं अन्ततः एक यमनी तलवार ही बाक़ी रह गयी थी।

हज़रत ख़ालिद ने सिद्दीक़ी काल में आन्तरिक तथा बाहरी सीमाओं पर जो कार्य किये हैं वह स्वर्णीय अक्षरों से लिखने योग्य हैं।

मुरतदीन (धर्मत्यागियों) के विरोध में हज़रत अबू बक्र

रज़ि0 ने जो सेनाएं भेजीं उनमें से एक का नेतृत्व हज़रत ख़ालिद ने किया, उस सेना ने, नुबुव्वत का दावा करने वाले तलहा अल असदी और मालिक बिन नुवैरा के सर कुचलने में शानदार सफलता प्राप्त की, मालिक मारा गया और तलहा भागने में सफल रहा, मालिक के क़त्ल और उसके क़बीले की सरकूबी (दमन) के बाद आप को मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ यमामा की युद्ध के लिए रवाना कर दिया गया, शदीद जंग के बाद मुसैलमा क़त्ल कर दिया गया और उसकी क़ौम बनू हनीफा इस्लाम ले आई, उसके बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने जहां रूमियों के मुकाबले में शाम व ईराक़ में फौजों को रवाना किया वहीं हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को ईरानियों की तरफ़ मोड़ दिया, अल–अब्ला के मुक़ाम पर ईरानी फौजों और इस्लामी मुजाहिदों के बीच हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ि0 की क़ियादत में सबसे पहली जंग बरपा हुई, जिसमें अल्लाह पाक ने इस्लामी फ़ौज़ को फत्ह नसीब फरमाई, उसके बाद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 को हज़रत अ़याज़ बिन ग़न्म की मदद का हुक्म मिला जो फत्हे ईराक़ के लिए रवाना किये गये थे। हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ि0 एक साल दो माह ईराक़ में ही रहे और पन्द्रह जंगें लड़ीं, सब में जीत हासिल की, फिर वहां से आप को यरमूक का हुक्म मिला तो आप यरमूक पहुंचे जहां उन्हें तमाम उमराए लश्कर ने काइदे आला मुनतखब किया रूमी साम्राज्य के विरुद्ध इस्लामिक सेना ने आपके नेतृत्व में विजय प्राप्त की, इसी युद्ध में जब खालिद बिन वलीद को फ़ारूक़ी आदेश से पदच्युत कर दिया गया तो आप किसी मलाल के बिना हज़रत अबू उबैदा के नेतृत्व में जंग लड़ते रहे।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 युद्ध कला में अद्वतीय थे, आपकी अनमिट महान कृतियों को इतिहास के पन्नों में देखा जा सकता है, आपका देहान्त 21 हिज्री में हुआ। उस समय आपकी आयु 60 वर्ष की थी। आपका देहान्त ''ह़म्स'' अथवा मदीना मुनव्वरा में हुआ देहान्त के समय आपने कहा, ''मैंने लगभग 300 लड़ाइयां लड़ी हैं, मेरे शरीर के हर भाग में कहीं तलवार, कहीं भाला तो कहीं तीर के घाव का निशान है, परन्तु शहादत से वंचित रहा और आज बिस्तर पर देहान्त हो रहा है। आपने वसीयत फरमाई कि मेरे हथियार और सवारी का घोड़ा अल्लाह की राह में जिहाद के लिए वक्फ कर दिया जाए और उनका कुल असासा (सामग्री) एक ग़ुलाम एक घोड़ा और हथियार था।

हज़रत ख़ालिद को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अत्यधिक प्रेम था, आपके विषय में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन

है कि "ख़ालिद को कष्ट न देना कि वह अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार हैं"।

बड़े खेद की बात है कि इस काल में उनके मज़ार को बम विस्फोट द्वारा उड़ा दिया गया, जिन्होंने ऐसा किया उन्होंने मुसलमानों ही को नहीं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी दुख पहुंचाया, अल्लाह इस्लाम के दुश्मनों से इस्लामी जगत तथा मुसलमानों को सुरक्षा प्रदान करे, आमीन।

❖❖❖

वास्तविक सफलता..........

(मदरसा इन्सानियत की ज़रूरतः 18) अर्थात अभी मदरसों से ऐसे लोग निकलते हैं जो सत्य असत्य तथा वैध, अवैध का अन्तर स्पष्ट करते हैं वह किसी शक्ति के आगे नहीं झुकते वह पद के लिए सत्य नहीं छोड़ते वह अवसरवादी नहीं होते वह पैसों से बिक कर सत्य नहीं छोड़ते।

यह अल्फाज़ इन्सानियत के लिए सहीह और मोतबर अफराद तैयार करने वालों की तरफ़ इशारा करने के लिए काफी हैं, और उन से यह हक़ीक़त अयां हो जाती है कि मदरसों ने माजी (विगत काल) में क्या कारनामें अन्ज़ाम दिये हैं और भविष्य में उनकी क्या योजनायें तथा संकल्प हैं, उनके प्रयासों का महवर (धुरा) केवल दीने इस्लाम था, और वह रब्बानी शरीअत (रब का विधान) थी, जिसको हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ले कर आए और यही वास्तविक सफलता तथा स्थाई कल्याण के आधार हैं।

अल्लाह तआला पवित्र कुर्आन में फरमाता है अनुवादः "कह दो कर्म किए जाओ, अभी अल्लाह और उसका रसूल और ईमान वाले तुम्हारे कर्म को देखेंगे"। फिर तुम उसी ओर पलटोगे, जो छिपे और खुले को जानता है"।

(अत्तौबाः 105)

❖❖❖

हज़रत मुआ़विया..........

कर आपने दुआ़ दी। तर्जुमा "ऐ अल्लाह इसको इल्म से भर दे" जब आपके वालिद इस्लाम ले आए तो उन्होंने नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैं इस्लाम लाने से क़ब्ल मुसलमानों से क़िताल करता था अब आप मुझे हुक्म दीजिए कि मैं कुफ़्फ़ार से लडूं और जिहाद करूं, नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "ज़रूर! ज़िहाद करो"।

चुनांचि इस्लाम लाने के बाद मुआविया रज़ि0 और आप के वालिद ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हमराह मुख़तलिफ ग़ज़वात में शिरक़त की और कुफ़्फ़ार से जिहाद किया, आप रज़ि0 ने आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हमराह गज़–वाए–हुनैन में शिरकत की और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपको कबीलऐ हवाज़िन के माले ग़नीमत में से सौ ऊँट और चालीस ओक़िया चाँदी अ़ता फरमाई।

❖❖❖

इल्मे दीन और जदीद तालीम की जामेअ़ शख्सीयत

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —प्रस्तुतिः हुसैन अहमद

''मौलाना मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी साहिब रह0 सिर्फ इल्मे दीन के हामिल और दीनी शख्सीयत ही नहीं बल्कि उन्होंने जदीद तालीम (आधुनिक शिक्षा) भी ज़रूरी हद तक हासिल की और जदीद तालीम के हल्के में खासा वक़्त गुजारा और उनको इस तरह आलमी हालात और मौजूदा अहद के तकाज़े और मुश्किलात को समझने का मौका मिला और इस ज़िम्न में मग़रिबी फिक्र और साम्राजी व गैर साम्राजी मन्सूबा बन्दियों (परियोजनाओं) से वाकफीयत हासिल हुई, बल्कि इस सिलसिले में आलमे इस्लाम को जिन मुश्किलात (कठिनाइयों) का सामना है, उसको गहराई से उन्होंने समझा''।

''हमारे इस्लामी और मश्रिकी मुमालिक जहां यूरोप को गल्बा हासिल हुआ वह इसी इन्तिशार और बे राह रवी का शिकार हो गये, मगरिबी निज़ामे तालीम में इन्सानी तशकील में बे राह रवी के रुजहानात जमा हो गये और उसी को अस्ल समझा जाने लगा, इसमें इन्सान को आला मख़्लूक़ बनाने के बजाये सिर्फ हैवाने नातिक तक महदूद कर दिया गया। और इन्सानी जिहानत और इल्मी सलाहीयत की बिना पर तरक़्क़ी करने के तक़ाजे को पूरा किया गया। तो वह भी सिर्फ माद्दी ज़िन्दगी और जाहिरी शौकत व अज़मत के हुसूल का जरीआ़ समझते हुए किया गया, ऐसी सूरते हाल में हमारे मश्रिकी मुमालिक में जो मगरिबी इस्तेमार की जोर दस्ती और ज़ियादती का आमतौर पर शिकार हैं। ज़रूरत है कि बिगड़े हुए माहौल को सहीह रुख पर लाने की तरफ़ तवज्जुह दिलाई जाये और जो बातें बिगाड़ का जरीआ बन रही हैं उनकी इस्लाह की ज़रूरत को वाजेह किया जाये''। इस सिलसिले में फाज़िल मुसन्निफ मौलाना सय्यिद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 (मोतमद तालीम नदवतुल उलमा) जिन्होंने मगरिबी निज़ामे तालीम का गहरा मुताला किया है और उलूमे इस्लामिया की तहसील के साथ मगरिबी अफ्कार के मुताले से मगरिबी तमद्दुन, मगरिबी निज़ामे हयात, मगरिबी फिक्र व फलसफा और मग़रिबी निजामे तालीम से अच्छी वाकिफीयत पैदा की है, उन्होंने इस सिलसिले में

फिक्र मन्दी महसूस की और उसकी बिना पर इसको मौजूअ़ बनाया और चश्म कुशा मज़ामीन लिखे हत्ता कि उन मज़ामीन का एक मजमूअ़ा तैयार हो गया है।''

कठिन शब्दों के अर्थः

मगरिबी फिक्र=पाशचात्व विचार, इन्तिशार= अव्यवस्था, मगरिबी निज़ामे तालीम= पाशचात्व शिक्षण व्यवस्था, ज़म= मिला जाना, आला मख़्लूक़= उच्च सृष्टि, हैवाने नातिक= बातें करने वाला जानवर (मनुष्य), इस्तेमार= साम्राज्य, माहौल= वातावरण, तहसील= प्राप्ति, मगरिबी अफकार= पाशचात्व विचार, मुताला (मुतालअ़ा)= अध्ययन, तमद्दुन= नागरिकता, मगरिबी निज़ामे हयात= पाशचात्य जीवन व्यवस्था, फिक्रमन्दी= चिन्ता, मौजूअ़= विषय, चश्म कुशा= आँख खोल देने वाला, होशियार कर देने वाला।

❖❖❖

हज़रत मौलाना मुहम्मद........

मौलाना का दीनी इल्म बहुत पुख्ता था मगर मौलाना आम मजमें में तकरीर न फरमाते, मैंने यह तो सुना कि फुलां जगह मौलाना ने तक़रीर की मगर मुझे उनकी तक़रीर सुनने का कभी मौक़ा न मिला।

मौलाना अब्दुल करीम पारिख (नागपुरी) ने जब कुर्आन करीम, का तर्जुमा करके शाये कराया तो एक साहिब ने उनके तर्जुमे पर एतिराज़ करते हुए उनके ख़िलाफ़ मुकद्दमा दायर कर दिया चुनांचे वह अपना तर्जुमा लेकर आये कि कोई नदवी आलिम इसे देख कर जहां ज़रूरत हो तस्ह़ीह़ कर दे, काम इतना पेचीदा था कि कोई इस काम के लिए तैयार न हुआ। हज़रत मौलाना मुईनुल्लाह नदवी रह0 नाइब नाजिम नदवतुल उलमा ने मुझे हुक्म दिया कि यह काम मैं करूं, मैं किंग सऊद यूनिवर्सिटी से तफसीर में एम0ए0 करके आया था, मैंने इस शर्त पर उस काम को क़बूल किया कि मेरा काम जनाब मौलाना वाज़ेह रशीद रहमतुल्लाहि अलैहि मुलाहज़ा फरमा कर फाइनल करें, मौलाना ने इसे क़बूल फ़रमा लिया, दो साल से ज़ियादा अर्से में यह काम पूरा हुआ।

मेरी आंखों का आप्रेशन हुआ और कामयाब आप्रेशन हुआ लेकिन रेटीना मुतअस्सिर हो जाने के सबब मैं पढ़ने से माजूर हो गया, अन्दाज़े से लिख लेता हूं मगर पढ़ नहीं पाता, यह मालूम करके मौलाना ने अफ़सोस का इज्हार किया। अल्लाह तआला मौलाना रहमतुल्लाहि अलैहि की मग़फिरत फरमा कर दरजात बुलन्द फरमाये और उनके मुतअल्लिकीन को सब्रे जमील अता फ़रमाये।

आमीन।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: क्या सूद की रक़म यतीम लड़की की शादी में दे कर या बीमार शख्स की मदद करके सवाब हासिल किया जा सकता है?

उत्तर: सूद की रक़म सवाब की नियत से देना गुनाह है क्योंकि माले हराम से सदक़ा करना सद्क़े की तौहीन है, अल्बत्ता बिला नीयते सदका यतीम लड़की की शादी या गरीब बीमार शख्स के इलाज के लिए सूद की रक़म दी जा सकती है बशर्ते कि वह उसके मुहताज हों और शादी और इलाज के लिए उनके पास जाइज़ रक़म मौजूद न हो। (रद्दुल मुहतारः 7/223)

प्रश्न: क्या हासिल शुदा सूद की रक़म किसी ज़रूरत मन्द या ग़रीब को बतौरे कर्ज़े हसना दे कर वापस शुदा रक़म अपने मसरफ में ला सकते हैं?

उत्तर: सूद की रक़म कर्ज़ में देना, फिर कर्ज़ से वापसी के बाद उसे अपने मसरफ में लाना जाइज़ नहीं, अगर सूद की रक़म किसी मुसलमान के पास आ जाये तो उसे चाहिए कि बिला नीयते सद्क़ा व सवाब गुरबा पर खर्च कर दे।

(बजलुल—मजहूदः 1/37)

प्रश्न: बक्र ने जैद से क़र्ज लिया लेकिन एक अरसे से जैद का पता नहीं और बक्र कर्ज़ अदा करना चाहता है तो किस तरह अदा करे, क्या उनके वरसा को कर्ज़ अदा करने से अदाइगी हो जायेगी?

उत्तर: अगर बक्र ने जैद से कर्ज़ लिया हो और जैद का इल्म न हो और न उसके मिलने की उम्मीद हो, अल्बत्ता उनके वरसा का पता हो तो इस सूरत में जैद से लिया गया कर्ज़ उनके वरसा को दिया जायेगा इस तरह कर्ज की अदायगी हो जायेगी।

(रद्दुल मुहतारः 6/443)

प्रश्न: एक शख्स के दादा ने कर्ज़ लिया था लेकिन अदायगी से पहले उनकी वफ़ात हो गई और अन्होंने किसी वारिस को कर्ज़ अदा करने की वसीयत नहीं की, अब उनके वरसा उनकी जानिब से कर्ज़ अदा करना चाहते हैं, तो क्या कर्ज़ की अदायगी हो जायेगी?

उत्तर: अगर किसी ने कर्ज़ लिया हो और कर्ज़ अदा करने से पहले उनकी वफात हो जाये तो उनके तर्के से कर्ज़ की अदायगी की जाये और अगर मय्यित ने कर्ज़ की अदायगी की वसीयत नहीं की और वरसा अदा कर दें तो यह भी काफी हो जायेगा।

(दुर्रे मुख्तारः 2/533)

प्रश्न: कर्ज़ की अदायगी के वक़्त कर्ज़ से ज़ियादा देना जाइज़ है या नहीं जब की ज़ियादती अक़्द में मशरूत न हो बल्कि इत्तिफाक़न कर्ज़ अदा करते वक़्त कुछ ज़ियादा दे दिया जाये?

उत्तर: कर्ज़ अदा करते वक़्त कुछ ज़ियादा दे दिया जाये जब कि ज़ियादती अक़्द में मशरूत न हो और न उसका रवाज हो कि ज़ियादती की उम्मीद की जाती हो तो ऐसी

सूरत में कर्ज़ से ज़ियादा देना दुरुस्त है।

(जामे तिर्मिज़ीः 1/240)

प्रश्नः आज कल लोगों में बिला ज़रूरत कर्ज़ लेने का काफी रवाज हो गया है, क्या बगैर मजबूरी भी कर्ज़ लेना जाइज़ है?

उत्तरः अहादीस से यह बात मालूम होती है कि मकरूज़ बनना कोई पसन्दीदा अमल नहीं है और जब तक कोई वाक़ई हाजत दरपेश न हो हत्तल– इम्कान इस से बचना चाहिए, नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मकरूज़ बनने से अल्लाह की पनाह मांगा करते थे।

(सहीह बुखारीः 2397)

प्रश्नः कर्ज लेने के बाद उसकी अदायगी की फिक्र न करना या अदा करने की पोजीशन हो, उसके बावजूद टाल मटोल से काम लेना शरअ़न कैसा है?

उत्तरः ज़रूरत के वक़्त अदायगी की नीयत से कर्ज लेना जाइज़ है, लेकिन कर्ज़ ले कर उससे ग़ाफिल हो जाना और अदायगी की नीयत न करना जाइज़ नहीं, हदीस नबवी में है कि गफलत के तीन दर्जे हैं, उनमें से एक दर्जा यह है कि आदमी कर्ज की अदायगी से पूरी तरह गाफिल हो जाये और कर्ज उस पर सवार रहे। (शर्हुमुश्किलिल आसार लित्तहावीः 4285) दूसरी हदीस में है कि मालदार शख्स का कर्ज़ की अदायगी में टाल मटोल करना जुल्म है।

(तिर्मिजी)

प्रश्नः एक शख्स कपड़े की तिजारत करता है, उनके साथ एक गैर मुस्लिम काम करता है, वह सिर्फ उसके कारोबार में शरीक रहता है? तो क्या वह गैर मुस्लिम के साथ मिल कर कारोबार कर सकता है?

उत्तरः आम हालात में गैर मुस्लिमों के साथ मुआमलात करना जब कि बाहम दोस्ताना तअल्लुक़ात हों शरअन जाइज है, हदीस शरीफ में है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खैबर के यहूदियों के साथ मामला फरमाया था।

(बुखारीः 1/377)

और हज़रत जाबिर रज़ि0 से मरवी है कि वह मदीने में यहूदियों के साथ बैअ़ सलम किया करते थे।

(बुखारीः 2/322)

(किसी को पेशगी रक़म दे कर मुकर्ररा वक़्त पर, मुकर्ररा गल्ला वगैरा, मुकर्ररा भाव पर देने का सौदा करना बैअ़ सलम (बैए सलम) कहलाता है)।

प्रश्नः क्या गैर मुस्लिमों को घर में काम के लिए मज़दूर रखा जा सकता है?

उत्तरः घरों में काम के लिए गैर मुस्लिम मुलाज़िम को रखना जाइज़ है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिजरत के मौके पर एक गैर मुस्लिम को मदीने का रास्ता बताने के लिए बतौरे अजीर (मज़दूर) रखा था, इससे मालूम हुआ कि गैर मुस्लिम को मज़दूर रखा जा सकता है।

(सही बुखारीः 2263)

प्रश्नः आज कल बहुत सारे लोग अपने बच्चों को घरों पर ट्यूशन के ज़रिये कुर्आन करीम पढ़वाते हैं क्या उसकी उजरत मुतअय्यन या गैर मुतअय्यन करके लेना दुरुस्त है?

उत्तरः कुर्आन की तालीम के

लिए मुअल्लिम का इन्तिज़ाम करना दुरुस्त है और पढ़ाने वाले कि लिए उजरत मुतअय्यन करना भी जाइज़ है, इसलिए कि यह तिलावते कुर्आन मजीद की उजरत नहीं होती बल्कि तालीमे कुर्आन की उज़रत होती है जिस को मुतअख्खरीन फुकहा ने इशाअते तालीम की मस्लिहत के पेशे नज़र जाइज़ करार दिया।

(रद्दुल मुहतारः 9/77)

प्रश्नः कुर्आन मजीद और दीनयात की तालीम पर माहाना तलबा से फीस मुकर्रर करके पढ़ाना कैसा है?

उत्तरः कुर्आन मजीद दीनयात की तालीम देना माहाना फीस तलबा से लेना जाइज़ है, मुतअख्खिरीन फुक़हा ने इशाअते कुर्आन व दीनयात की खातिर उस को जाइज़ लिखा है।

प्रश्नः हिन्दोस्तान में सरकारी मुलाज़िमीन को रिटायरमेन्ट के बाद हुकूमत की तरफ से पेन्शन दी जाती है, क्या इस रक़म का लेना शरअ़न जाइज़ है?

उत्तरः हुकूमत की तरफ से जो पेन्शन दी जाती है वह बतौरे तावुन होती है जिस के लेने में शरअन कोई हर्ज नहीं।

(अलफतावा अलहिन्दियाः 4/413)

प्रश्नः क्या कन्ट्रेक्ट पर काम करना जाइज़ है जिस में कन्ट्रेक्टर खुद काम नहीं करता बल्कि काम की जिम्मेदारी ले कर दूसरों से काम करवाता है, क्या ऐसा करना जाइज़ है?

उत्तरः कन्ट्रेक्ट पर काम की ज़िम्मेदारी लेकर काम करना जाइज़ है, इस में शरअन कोई क़बाहत नहीं जैसे आज कल कन्ट्रेक्टर काम की ज़िम्मेदारी खुद क़बूल करता है और दूसरों से काम करवा कर मुनाफे का मुस्तहिक़ होता है।

(रद्दुल मुहतारः 9/24)

प्रश्नः मुलाज़िम पेशा जिस ने अपना मुकर्ररा वक्त माहाना मिलने वाली तन्ख्वाह के बदले में लगा रखा है, अगर वह वक्ते फुरसत या ड्यूटी खाली होने के वक्त कुछ काम करे तो सहीह है या नहीं ?

उत्तरः अगर मुलाज़मत काम की है कि इतना काम करना होगा तब तो खाली वक्त में अपना काम करना दुरुस्त है, अगर मुलाजमत वक्त की है तो बिला इजाज़ते मालिक अपना काम करना दुरुस्त नहीं है।

(दुर्रे मुख्तारः 9/94)

प्रश्नः एक शख्स एक कम्पनी में काम करता है लेकिन वह दूसरे आदमी को कुछ रूपया दे कर अपनी जगह काम करवाता है और कम्पनी को नहीं बताता, क्या ऐसा करना जाइज़ है?

उत्तरः कम्पनियों और इस किस्म के इदारों में उमूमन अमल और शख्स दोनों मक़्सूद होते हैं यानी मालिक यह चाहता है कि मुतअय्यन शख्स ही इसका मुकर्ररा काम अन्जाम दे, लिहाज़ा अगर मालिक ब खुशी दूसरे को मुकर्रर करने की इजाज़त देदे और उसको पूरी सूरते हाल का इल्म हो और कोई एतिराज़ न करे तो इसमें कोई हरज़ नहीं, ब सूरत दीगर यानी मालिक इजाज़त न दे तो इसका यह अमल जाइज़ न होगा।

(रद्दुल मुहतारः 9/24)

❖❖❖

इस्लाम के तीन बुन्यादी.........

लेकिन इस आसानी, दर्जा बदर्जा और आसान करने का सम्बन्ध शिक्षा–दीक्षा और आंशिक समस्याओं से था जिसका अकायद (विश्वासों) और दीन के आधारभूत सिद्धान्तों से सम्बन्ध नहीं। जिन बातों का सम्बन्ध सामूहिक और अल्लाह के आदेशों से है, उनमें हर दौर के अंबिया फौलाद से अधिक बेलचक और पहाड़ से ज़ियादा मजबूत होते हैं।

नबियों की इताअत (आज्ञा पालन) और तक्लीद (अनुकरण) पर कुर्आन का जोर–

पवित्र कुर्आन जगह जगह नबियों का अनुसरण, उनकी सीरत को अपनाने और उनके तर्ज पर ज़िन्दगी गुज़ारने और यथासम्भव उनकी मुशाबहत (सदृश्यता) अपनाने पर ज़ोर देता और कहता हैः–

अनुवादः– *निःसंदेह, तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है, उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और आख़िरत का उम्मीदवार हो और अल्लाह को ज़ियादा से ज़ियादा याद करे। (सूरः अल अहज़ाब 21)*

वह मुसलमानों को हिदायत करता है कि वे बराबर यह दुआ मांगते रहें कि :–

अनुवादः– *हमें सीधे रास्ते पर चला, उन लोगों का रास्ता जिनको तूने पुरस्कृत किया, उन लोगों का रास्ता नहीं जिन पर तेरा गज़ब (प्रकोप) हुआ, और न भटके हुओं के (रास्ते पर चला) (सूरः अल फातिहा 5–7)*

इसमें कोई शक नहीं कि खुदा के इनाम से सम्मानित बन्दों के सरदार नबी और रसूल ही हैं। इस दुआ को नमाज़ में भी शामिल कर दिया गया। जब भी इन्सान इस दुआ के क़ानून की पैरवी और इन पुरस्कृत बन्दों की सीरत (चरित्र) और सूरत में मुशाबहत (सदृश्यता) करेगा तो खुदा से करीब और उसके नज़दीक सम्मानित होगा।

जारी..........

दुआए मग़फिरत की दरख्वास्त

7 मार्च 2019 जुमेरात की सुब्ह को अज़ान के वक़्त मदरसा फलाहुल मुस्लिमीन तेंदुआ (रायबरेली) के दफ्तर के ज़िम्मेदार जनाब हाफिज़ अब्दुर्रहीम साहब वफ़ात पा गये, ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' तमाम पाठकों से उनके लिए मगफिरत की दुआ की दरख्वास्त है। मरहूम बड़े परहेजगार और नेक तबीयत के मालिक थे असातिजा व तलबा के साथ हमेशा खैरख्वाही का जजबा रखते थे और इलाके में भी बड़े मक़्बूल थे उन्होंने तक्रीबन 50 वर्षो तक मदरसे की ख़िदमत की।

मरहूम, मौलाना जमाल अहमद नदवी कारकुन शोब-ए-दावत व इरशाद नदवतुल उलमा व प्रूफ रीडर सच्चा राही के खुसर थे। मरहूम ने अपने पीछे अहलिया, तीन बेटे, दो बेटियां छोड़ीं, तीनों बेटे माशाअल्लाह हाफिज़ व आलिम और बर सरे रोजगार हैं। दोनों बेटियां आलिमा, शादी शुदा हैं, अल्लाह तआला तमाम पसमांनदगान को सब्रे जमील अता फरमाये और मरहूम की बाल बाल मग़फ़िरत फरमा कर जन्नतुल फिरदौस में जगह अता फरमाये। आमीन।

सम्पादक

शाबान का मुबारक महीना

—इदारा

शाबान के महीने के आखिर दिनों में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम रमज़ान की आमद की ख़बर दे कर लोगों को उस के इस्तिक़बाल और तैयारी की तरगीब फरमाया करते थे आप सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम की पैरवी में हमारे उलमा हज़रात भी शाबान के आख़िरी अशरे में रमज़ान के इस्तिक़बाल पर तकरीरें कर के रमज़ान की तैयारी करने की तरगीब देते हैं।

रमज़ान की तैयारी यह है कि दिल व दिमाग को रमज़ान के लिए तैयार करें कि इनशाअल्लाह रमज़ान के रोज़े रखने हैं, रमज़ान की सहरी और इफ्तार के बारे में भी शाबान ही में सोच लेना और तैयारी कर लेना बेहतर है। अगर अल्लाह ने आप को वुसअत दी है तो शाबान ही में तै कर लें कि किन ग़रीबों की मदद करना है और किन लोगों को इफ़्तार पर बुलाना है और किन गरीबों और दोस्तों को इफ़्तारी भेजना है, किन किन दीनी मदरसों की ज़कात व खैरात से मदद करना है वगैरा।

अल्लाह तौफीक़ दे तो शाबान की पन्द्रहवी रात को जाग कर नफ़्ल नमाज़ें पढ़ें तिलावत करें अल्लाह का जिक्र करें अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ें और अल्लाह तआला से अपने लिए, उम्मत के लिए, अपने मुल्क के लिए और सारे आलम के लिए खैर की दुआएं मांगे अल्लाह तौफीक़ दे तो पन्द्रह शाबान को रोज़ा रखें, यह रोज़ा मुस्तहब है।

बाज़ जाहिल शाबान की पन्द्रहवीं रात में आतिशबाज़ी करते हैं यह बड़ा गुनाह है जिस भाई को इस में मुब्तला पायें हिकमत से उसे रोकें, अल्लाह तआ़ाला हम को और हमारे पाठकों को और तमाम भाई बहनों को शाबान व रमज़ान की बरकतों से नवाजे।

आमीन।

मौलाना वाजेह रह0 का खला पुर होना निहायत मुश्किल

मौलाना के इन्तिक़ाल पर अहा–तए–दारुल उलूम नदवतुल उलमा में ताज़ियती नशिस्तों का इनइक़ाद

–रिपोर्टः कामरान अशरफ –प्रस्तुतः हुसैन अहमद

मौलाना रहमतुल्लाहि अलैहि की हयात व खिदमात पर उम्मीद है कई रिसालों (पत्रिकाओं) के खास नम्बर निकलेंगे, अरबी तथा उर्दू में पुस्तकें लिखी जाएंगी, सम्पोज़ियम सेमीनार और कांफ्रेन्सें और ताज़ियती नशिस्तें मुनअकिद (आयोजित) होंगी, जिनका सिलसिला शुरु हो चुका है, इन सब का तज़किरा तो खुसूसी इशाअत (प्रकाशन) में किया जाएगा, यहां सिर्फ अहाता दारुल उलूम नदवतुल उलमा में मुनअक़िद होने वाले ताज़ियती जल्सों की एक मुख्तसर रिपोर्ट पेश की जा रही है, अल्लाह तआला मौलाना मरहूम को जन्नतुल फिरदौस में आला मुक़ाम अता फरमाए,

आमीन।

मरकज़ी जमईयतुल इस्लाह में:– ‘‘आप को मालूम होना चाहिए कि जब कोई जगह खाली होती है तो उस खला का पुर होना बहुत मुश्किल होता है, मौलाना सय्यिद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 का शुमार उन्हीं शख्शीयात में है जिन का खला पुर होना बज़ाहिर मुश्किल मालूम होता है’’।

जमालिया हाल में मरकज़ी जमईयतुल इस्लाह के ज़ेरे एहतिमाम मुनअक़िद ताजियती नशिस्त में मज़कूरा खयालात का इज़हार मुहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा लखनऊ जनाब डॉक्टर सईदुर्रहमान आज़मी नदवी ने किया। उन्होंने मज़ीद कहा कि ‘‘1973 ई0 से अब तक मेरा और मौलाना का चार दहाइयों से ज़ियादा का साथ रहा लेकिन कभी किसी अम्र में मैंने कोई क़ाबिले एतिराज़ बात या शरीअत के खिलाफ अदना अमल भी नहीं पाया, उन की शख्सीयत निहायत मुतवाज़े थी, रंज व गम इन्सानी जिन्दगी का खास्सा हैं लेकिन इन तमाम को इजाबी अन्दाज़ में क़बूल करना चाहिए, मैंने देखा कि मौलाना रहमतुल्लाहि अलैहि के वालिद का इन्तिक़ाल हुआ तो वह सब्र का पैकर थे, आली ज़रफी, अख्लाक़ी बलन्दी, शौके इबादत, जौके कुर्आन, दूसरों को फाइदा पहुंचाना, मौलाना की जिन्दगी भर का मामूल था। दुन्या के हालात और तारीख के अदवार से पूरी तरह वाकिफ थे, मौलाना रहमतुल्लाहि अलैहि मसनउर्रिजाल (सज्जन पुरुष बनाने वाले) थे, इस नशिस्त का मक़सद यही है कि हम उन की खूबियों को याद करें, उनको अपने अन्दर पैदा करने की हर मुम्किन कोशिश करें और उन की क़ाबिले रश्क ज़िन्दगी से सबक लें’’।

जनाब मौलाना अब्दुल कादिर पट्टनी नदवी नाइब मुहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा लखनऊ ने कहा कि ‘‘मौलाना सय्यिद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी रहमतुल्लाहि अलैहि ने हमेशा इल्म व अदब और अख्लाक़ व किरदार को

फरोग़ देने की कोशिश की, आप तवील तवील वक़्त तक खामोश और फिक्र व नज़र की दुन्या में गोताज़न रहते, उनकी पूरी ज़िन्दगी हमारे लिए एक रोशन मनारे की हैसियत रखती है, हम सब उनसे अपनी ज़िन्दगी की राहों में खूब फाइदा उठा सकते हैं''।

मौलाना अलाउद्दीन नदवी वकीलु–कुल्लीयतिल लुगतिल अरबीया, दारुल उलूम नदवतुल उलमा ने कहा कि ''इस इदारे के अन्दर हम सब का रिश्ता इल्मी व फिक्री रिश्ता है, इसने हम सब को जोड़ कर रखा है, वह अज़ीम शख्सीयत जिन की याद में यह नशिस्त मुनअ़क़िद हो रही है वह इसी से मरबूत है, और यह रिश्ता दाइमी और अज़ली है। हमें इस रिश्ते को और मज़बूती से काइम रखना और आगे बढ़ाना चाहिए।

मौलाना ने मज़ीद कहा कि ''मौतुल अ़ालिम मौतुल आलम'' कि एक आलिमे दीन इस दुन्या को हयात बख्श पैग़ाम देता है। उससे रूहानी ज़िन्दगी को रौशनी मिलती है, मौलाना सय्यिद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 की मौत वाक़ई एक आलम की मौत है''।

नशिस्त का आगाज़ मुहम्मद कअ़ब की तिलावते कलाम पाक से हुआ, मौलाना मरहूम से मुतअल्लिक मौलना मुहम्मद मुर्तज़ा सलफी नदवी की नज़्म को मुहम्मद हामिद ने पेश किया, निज़ामत के फराइज़ नाज़िम जमईयतुल इस्लाह, कलाम रिज़ा फैज़ी ने अन्जाम दिये। और मौलाना मरहूम की हयात व खिदमात पर मुख्तसर मक़ाला भी पेश किया।

मस्जिद दारुल उलूम में:–

दारुल उलूम नदवतुल उलमा लखनऊ के मोतमद तालीम, अरबी, उर्दू के मुम्ताज़ अदीब व इन्शा परदाज़, फिक्रे इस्लामी के नक़ीब, आस्माने सहाफत के दरख–शिन्दा सितारा, दाईये इलल्लाह, इल्म व अमल का हसीन संगम, तवाजो व इन्किसारी का अज़ीम पैकर के सानि–हए–इरतिहाल पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा की पुरशिकोह मस्जिद में एक ताज़ियती नशिस्त बरोज़ जुमेरात बतारीख 24 जनवरी 2019 ई0 को मौलाना बुरहानुद्दीन संभली उस्तादे तफ्सीर व फिक़्ह दारुल उलूम नदवतुल उलमा की सदारत में मुनअक़िद हुई, जिससे खिताब करते हुए उन्होंने कहा कि ''मौलाना रहमतुल्लाहि अलैहि से मेरा तक़रीबन 60 साल से तअल्लुक था, लेकिन कभी भी एक दूसरे से शिकायत न हुई, यह मरहूम की अज़मत की दलील है, मौलाना मरहूम की सब से अहम खुसूसीयत उन की खामोशी, तबई इन्किसारी व तवाज़ो है, वह अगर एक तरफ वलीयुल्लाह थे तो दूसरी तरफ आलमे इस्लाम के एक अज़ीम मुफक्किर, मुदब्बिर, सहाफी, अदीब और मग़रिबी तहज़ीब पर गहरी नज़र रखने वाले थे, उन्होंने दारुल उलूम नदवतुल उलमा लखनऊ और मुस्लिम यूनीवर्सिटी अलीगढ़ दोनों इदारों से तालीम हासिल की और दोनों से खूब फाइदा उठाया''।

मौलाना ने मजीद कहा ''बड़े–बड़े उदबा से उनकी तारीफ सुनी है, बिला शुब्हा मौलाना मरहूम की रेहलत आलमे इस्लाम के लिए एक अज़ीम खसारा है बिलखुसूस नदवतुल उलमा के लिए, जिस की भरपाई बज़ाहिर बहुत मुश्किल नज़र आती है, अल्लाह बेहतर नेमुल बदल अता फरमाये''।

मौलाना नज़रुल हफीज़ नदवी अज़हरी अमीदु कुल्लीयतिल लुगतिल अरबीया ने अपने खिताब में कहा कि ''इस वक़्त जिस शख्सीयत से मुतअल्लिक हम लोग कुछ कहने और सुनने के लिए जमा हुए हैं, उनके बारे में एक मज्लिस में कुछ कहना और सुनना मुम्किन नहीं है, 1973 ई0 से ले कर अब तक मौलाना रहमतुल्लाहि अलैहि से मेरा बहुत गहरा रब्त रहा है उनकी सीरत व किरदार से हम बराबर सीखते रहे, मौलाना मरहूम का जिस खानवा–दए–हसनी से तअल्लुक है, उनके यहां तालीम व तरबीयत का बेहतरीन नज़्म है, मौलना इन दोनों सिफतों में बहुत मुम्ताज़ थे''।

मौलाना ने कहा कि ''हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद वाजेह रशीद हसनी नदवी रह0 ने दारुल उलूम नदवतुल उलमा लखनऊ से तालीम हासिल करने के बाद अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी से पोस्ट ग्रेजुऐशन किया, फिर आल इण्डिया रेडियो दिल्ली में 22 साल रहे, जहां मग़रिबी तहज़ीब पूरे उरूज के साथ पूरी सरगमी के साथ और पूरी गर्म जोशी के साथ मौजज़न थी, लेकिन मौलाना का दामन तर क्या होता, वह हज़रत इब्राहीम अलै0 और अल्लामा डॉक्टर मुहम्मद इक़्बाल रह0 की तरह सहीह सालिम निकल आये, यह बहुत गैर मामूली बात है कि मौलाना मरहूम ऐसे काफिराना, ज़ालिमाना माहौल से अपने आप को बचा लाये और दामन तर होने नहीं दिया, मौलाना मरहूम ने वहां के कुतुब खाने से खूब फाइदा उठाया और इस्लाम की तरजुमानी की, उन्होंने फिक्री इन्हिराफ के मैदान में जबरदस्त कारनामा अन्जाम दिया, मौलाना मरहूम का यह शेवा था कि उन्होंने दीन को और अल्लाह की रिज़ा को हमेशा पेशे नज़र रखा, अल्लाह तआला उन की कब्र को नूर से भर दे और जन्नतुल फिरदौस में जगह अता फरमाये।

मौलाना मुहम्मद खालिद गाजीपुरी नदवी सीनियर उस्तादे हदीस दारुल उलूम नदवतुल उलमा लखनऊ ने कहा कि ''हज़रत मौलाना सय्यिद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 तवाजो व इन्किसारी का हसीन गुलदस्ता थे, और सितारों के झुरमुट में माहे कामिल थे, और इसी के साथ फिक्रे इस्लामी के नक़ीब और सहाफत व अदब के बेताज बादशाह थे, जिस का हर पहलू दरखशां और नय्यरे ताबां है, यह वह दीदावर शख्सीयत थी जो बड़ी मुश्किल से चमन में पैदा होती है, मौलाना मरहूम को अल्लाह तआला ने आलमे इस्लाम में अज़ीम अदीब व सहाफी, मुअल्लिम, मुसन्निफ, मुरब्बी और दाइये इस्लाम का मुक़ाम अता किया था, जिनकी निगाह बलन्द थी, जां पुर सोज़ थी

और सुखन दिलनवाज़ था। अख्लाक़े आलिया में जिन की हैसीयत रोशनी के मीनार की थी और उस शबनम की थी जिससे जिगरे लाला में ढन्डक पैदा होती है''।

मौलाना ने मजीद कहा कि ''ऐसा महसूस होता है कि मौलाना रहमतुल्लाहि अलैहि हमारे दरमियान मौजूद हैं और इनशाअल्लाह मौजूद रहेंगे, आज तक हमने अल्लामा शिब्ली नोमानी रह0 अल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी रह0, हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 को फरामोश नहीं किया तो उन सब के मजमउल–इल्म और फिक्रे इस्लामी के दुर्रे शहवार हज़रत मौलाना यय्यिद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 को हम कैसे फरामोश कर सकते हैं, अल्लाह तआला उन्हें आला इल्लीयीन में जगह अता फरमाये और उनकी फिक्र पर हम सब को चलने की तौफीक़ अता फरमाये,

आमीन।

जमालिया हाल मेंः–

मरकज़ी जमईयतुल इस्लाह दारुल उलूम नदवतुल उलमा में बरोजे पीर बतारीख 28 जनवरी 2019 ई0 को हज़रत मौलाना सय्यिद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 पर एक ताज़ियती नशिस्त मुनअक़िद हुई, जिस की सदारत प्रोफेसर अनीस चिश्ती (पूना) ने की, उन्होंने तलबाए दारुल उलूम से खिताब करते हुए कहा कि ''हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद वाजेह रशीद हसनी नदवी रह0 क़द आवर सहाफी और दरवेश सिफत इन्सान थे, उनकी तहरीर से अरब व हिन्द के लोगों ने खूब फाइदा उठाया, उन्होंने अपनी तहरीर से जो इस्लामी रूह फूंकी है और इस्लाम के सांचे में लोगों की फिक्र को रंगने का जो काम किया है वह तारीख का एक सुनहरा बाब बन गया है। मौलना मरहूम ने जो कुछ लिखा सब फिक्र और दर्द व कर्ब के साथ लिखा बल्कि आंसुओं में नहा कर लिखा, उनकी तहरीर में संजीदगी भी है मतानत भी, इस्तिक़ामत भी है अज़ीमत भी, रवानी भी है रअनाई भी, दिलकशी भी है दिलगीरी भी, ईजाज़ भी है, इख्तिसार भी और उन सब से बढ़ कर रिजाए इलाही भी, अल्लाह उन्हें जन्नतुल फिरदौस में जगह अता फरमाये और उन का नेमुल बदल अता फरमाये''।

अब्बासिया हाल मेंः–

दारुल उलूम नदवतुल उलमा में अन्नादियुल अरबी और कुल्लीयतुद्दावा वल–एअ़लाम के इश्तिराक से हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 पर एक ताज़ियती नशिस्त अब्बासिया हाल में बरोजे जुमेरात बतारीख 31 जनवरी 2019 ई0 को मुनअक़िद हुई, जिस की सदारत मुहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा जनाब मौलाना डॉक्टर सईदुर्रहमान आज़मी नदवी ने की, मौलाना ने अपने सदारती खिताब में कहा कि ''नदवतुल उलमा एक ऐसा कारखाना है, जिस से बड़े बड़े मुफस्सिर, मुहद्दिस, फक़ीह, मुअर्रिख, अदीब व

इन्शा प्रदाज और खुदा तर्स इन्सान निकले हैं, जिन्होंने तूफानों के भंवर में हिच्कोले खाती कश्ती को साहिल पर ला खड़ा किया है, इन्हीं सिफात के हामिल थे हमारे दोस्त हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 जिन्होंने अपने फिक्र व अदब तहरीर व तक़रीर से लोगों की सहीह राह की तरफ रहनुमाई की, और खास तौर पर उन्होंने सहाफत के जरिये आलमे अरबी में जो सूर फूंका है वह क़ाबिले तक़्लीद भी है और क़ाबिले नमूना भी, मौलाना मरहूम ने अपनी सहाफत की घन गरज से पूरे आलमे अरबी में हलचल मचा दी, उनकी तहरीरें पढ़ पढ़ कर बड़े उदबा और इन्शा प्रदाज दंग रह जाते हैं, बिला शुब्हा मौलाना किरदार, गुफ़्तार, कलम व किरतास, फिक्र, व फन के बे ताज बादशाह थे, रास्त बाज़ी व दियानतदारी के मिनार थे, इसी के साथ अज़ीमत व इस्तक़ामत, अज़्मे मुसम्मम, इल्म व फज़्ल, ईमान व यक़ीन, सिद्क़ व सफ़ा, अद्ल व इन्साफ के एक कन्दील थे, जिन से लाखों लोगों ने रोशनी पाई, अल्लाह उन्हें इस का बदला अता फरमाये और जन्नतुल फिरदौस में आला मुक़ाम अता करे''।

मौलाना सय्यिद सलमान हुसैनी नदवी अमीद कुल्लीयतिद दावा वल—एलाम ने अपने खयालात का इज़्हार करते हुए कहा कि ''हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 एक नाबि—गए—रोज़गार शख्स थे, उनकी दीनी, इल्मी, अदबी खिदमात निहायत ही मुतनव्वेअ और गोनागूं हैं, इनके कारनामों की गूंज से अर—सए—दराज़ तक गुंबदे मीना पुरशोर रहेगा, मौलाना रह0 अपने जिन इम्तियाज़ात व कमालात, और खुसूसीयात की बदौलत पूरे मुल्क पर छाये हुए थे, उनमें एक बहुत नुमायां वस्फ उन की सहाफत भी है, जो उनकी घुट्टी में पड़ी थी, सहाफत को मौलाना ने बड़ी अज़्मत, इज्ज़त और वक़ार अता किया था, उनके इस जानिब मुतवज्जेह होने से अरबी व उर्दू सहाफत में चार चांद लग गये, मौलाना ने सहाफत से वह काम किया जो अल्लामा शिब्ली, अल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी रह0 मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह0 मौलाना शौकत अली रह0 मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी रह0 मुफक्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 ने किया अल्लाह उन को इस का बेहतरीन सिला अता फरमाये और उनके नक्शे क़दम पर हम सब को चलने की तौफीक़ अता फरमाये और उनको क़ब्र में करवट करवट राहत व सुकून अता फरमाये''।

नशिस्त का आगाज़ तिलावते कुर्आन मजीद से हुआ, निज़ामत अमीने आम अन्नादियुल अरबी फाखिर सबा ने की, दीन मुहम्मद, अब्दुल्लाह शमाइल ने मक़ाले पेश किये और एक मन्जूम कलाम उबादा अबुल बरकात क़ल्ब देहलवी (आलिया सालिसा शरीआ) ने पेश किया, प्रोग्राम में असातज़ा व तलबा की एक बड़ी तादाद ने शिरकत की।

❖❖❖

परीक्षा की तैयारी

—शमीम इक़बाल खाँ

परीक्षा सम्बन्धी महत्वपूर्ण सुझाव

1. परीक्षाः–

विद्यार्थियों को चाहिए कि जब उनकी परीक्षायें होने वाली हों या पाठ्यक्रम की समाप्ति के बाद दोहराई चल रही हो तो इस अवधि में कक्षाओं का त्यागा जाना बुद्धमानी का काम नहीं होता है, यही उपयुक्त अवसर होता है जब कुछ विशेष बातें मालूम हो जाती हैं और सम्भावित प्रश्नों के बारे में भी कुछ संकेत मिल जाते हैं।

2. पंजीकरणः–

परीक्षा से पूर्व इस बात की पुष्टि कर लेनी चाहिए कि परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए पंजीकरण हो चुका है? यदि नहीं हुआ इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही करनी चाहिए और पंजीकरण करा लेना चाहिए अन्यथा परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सकेंगे।

3. प्रवेश पत्रः–

यदि पंजीकरण हो गया है तो निश्चित रूप से प्रवेश पत्र प्राप्त हो जायेगा, यदि किन्हीं कारणों से प्रवेश पत्र प्राप्त नहीं होता है तो परीक्षा अधीक्षक से संपर्क स्थापित करके उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत करा दिया जाये और उनसे आवश्यक निर्देश प्राप्त कर लिये जायें। ध्यान रहे कि प्रवेश पत्र किसी परीक्षा में सम्मिलित होने का अनुमति पत्र होता है।

4. समय सारिणीः–

समय सारिणी के अनुसार ही पाठ्य को दोहरायें, ऐसा न हो कि परीक्षा किसी और विषय की हो और अध्ययन किसी अन्य विषय का किया जये।

5. खान–पानः–

परीक्षा की तैयारी ऐसे ज़ोर–शोर से न करें कि खान–पान और आराम की सुधि ही न रहे, मस्तिष्क और शरीर दोनों का स्वस्थ होना परीक्षा के लिए आवश्यक होता है, अतः उचित ख़ुराक और अधिक आराम आवश्यक होता है।

6. परीक्षा का दिनांक व स्थानः–

परीक्षा का दिनांक, समय व स्थान सुनिश्चित कर लेना चाहिए, सम्बन्धित निर्देशों का पुनरालोकन कर लेना चाहिए, परीक्षा के निर्धारित समय से 20–25 मिनट पहले परीक्षा केन्द्र पर पहुंच जाना चाहिए ताकि थकावट अथवा घबराहट, यदि किसी प्रकार की हो तो, दूर किया जा सके, ऐसी दशा में सहपाठियों अथवा सहकर्मियों से बातें करना काफी लाभप्रद होता है।

7. दोहराईः–

परीक्षा की समय सारिणी के अनुसार ही दोहराई का कार्य किया जाना चाहिए, परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि अन्तिम क्षणों तक पढ़ने अथवा दोहराई का काम न करें, लगातार पढ़ाई अधिक लाभदायक नहीं होती है, मरहले वार पढ़ाई से अधिक लाभ उठाया जा सकता है।

8. संदिग्ध प्रश्नः–

परीक्षा में शंका वाले प्रश्नों को हल करना जुआ वाला जोखिम मोल लेना होता है, ऐसी स्थिति में तीर कभी–कभी ही अपने निशाने पर लगता है, यह जोखिम उसी समय लिया जाये जब निगेटिव मार्किंग न की जानी हो।

9. सामग्रीः–

किसी भी परीक्षा में भाग लेने के लिए पहले से सम्बन्धित विषय की पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए, जब परीक्षा कक्ष में प्रवेश करे तो उस समय किसी भी प्रकार का मानसिक तनाव न होना चाहिए। आवश्यक सामग्री जैसे कलम, पेन्सिल, रुमाल, स्केल, तथा घड़ी आदि अथवा वह सामग्री जिन का उल्लेख निर्देशों में किया गया हो, साथ अवश्य ले जायें, वे वस्तुयें परीक्षा के मध्य सहायक होंगी।

10. मन और विश्वासः–

किसी प्रकार की परेशानी न महसूस करें, अपने विश्वास को बनाये रखें, परीक्षा के मध्य किसी सहयोगी या अन्य किसी से बातें न करें हो सकता है बातों से मन और भी चिन्तित हो जाये जो परीक्षा के लिए उपयुक्त नहीं होगा, आत्म विश्वास इस प्रकार का होना चाहिए "मैं पूरी तरह से तैयार हूं", और बहुत अच्छी परीक्षा दूंगा", फिर भी यदि परीक्षा से पूर्व अथवा परीक्षा के दौरान किसी प्रकार की परेशानी महसूस कर रहे हों तो हताश होने की आवश्यकता नहीं है, अपने स्थान पर पीठ सीधी करके बैठ जायें और धीमी गति से कुछ गहरी–गहरी सांसें लें इस प्रकार से आराम अनुभव करेंगे।

11. प्रश्न पत्रः–

प्रश्न–पत्र प्राप्त होने पर उसका अध्ययन गम्भीरता से किया जाना चाहिए, प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए अनुमान लगा लेना चाहिए ताकि समय का सही बंटवारा, प्रश्नों के आधार पर किया जा सके, साथ ही साथ प्रश्न वार प्वाइन्ट भी नोट करते रहना चाहिए यही प्वाइन्ट उत्तर व्याख्या करने में सहायक होंगे।

सही उत्तर तलाशने की तकनीकिः–

किसी भी परीक्षा में प्रश्न, चाहे वह पूर्ण प्रश्न हो अथवा किसी प्रश्न का भाग हो, यदि संकल्प कर लिया जाये तो सभी प्रश्नों के उत्तर लिखे जा सकते हैं, यह आवश्यक नहीं है कि इस प्रकार के सभी प्रश्नों के उत्तर परीक्षार्थियों को आते ही हों, यहां कुछ ऐसी तकनीकि पर विचार किया जायेगा जो उन प्रश्नों के हल तलाशने में सहायक सिद्ध होंगे जिनके उत्तर देने में असुविधा हो रही हो, यद्यपि यह तकनीकी ऐसी नहीं होगी जो सम्पूर्ण विषय की जानकारी करा सके फिर भी कुछ न कुछ सहायता अवश्य मिल सकती है।

प्रश्न और प्रयत्नः–

उन प्रश्नों को कतई नज़र–अन्दाज़ न करें जो देखने में मुश्किल लग रहे हों, न ही ऐसे प्रश्नों पर इतना समय बरबाद किया जाये कि अन्य प्रश्नों के पढ़ने का अवसर ही न रह जाये, ऐसे प्रश्नों को कई बार शान्त

शेष पृष्ठ...40 पर

सुहबतें नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम की इन्क़िलाब आफरीनी

(नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगत में मानवी स्वभाव को परिवर्तित करने की शक्ति)

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

दोस्त, दुश्मन सब का मानना है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगत में पारस का गुण था जो उनकी संगत में रहा वह कुन्दन ही नहीं स्वयं पारस बन गया, पशु स्तर के मनुष्य सज्जन पुरुष बन गये तथा सज्जन पुरुषों में फिरिश्तों के गुण पैदा कर दिये उनके विश्वास, उनकी नैतिक तथा आध्यात्मिक गुणों का ऐसा कुशल तथा संपूर्ण प्रशिक्षण हुआ कि उससे अधिक की कल्पना भी नहीं की जा सकती, जो आप के पास बैठा, आप के रंग में रंग गया, शरीअत के सांचे में ढल गया, शरीअत का अनुकरण संकल्प के बिना करने लगा, अनुकरण सरल तथा रुचिकर बन गया, पाप घृणित तथा अप्रिय बन गये, यहां तक कि उम्मत का सहाबा के विषय में विश्वास है कि वह सबसे सब आदिल (न्यायी) हैं, तथा कम दर्जे का सहाबी भी बाद के बड़े से बड़े वलीयुल्लाह (ईश भक्त) से अफज़ल (श्रेष्ठ) है।

अतएव केवल आधी शताब्दी में दुन्या ने देख लिया कि उनके नेतृत्य में विश्वव्यापी परिवर्तन हो गया तथा मानव जाति की जीवनियां पूर्णतः परिवर्तित हो गईं। मनुष्य विनाश की ओर जा रहा था वह आधी शताब्दी में विकास तथा सफलता के मार्ग पर चलने लगा तथा उसके सामने संसार की बड़ी शक्तियां झुक गईं। यह सब अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शिक्षण एवं प्रशिक्षण का प्रभाव था जिस ने जीवन के हर मार्ग पर पथ प्रदर्शन प्रदान किया तथा जीवन को सफल बनाने का मार्ग दिखाया।

❖❖❖

परीक्षा की तैयारी.......

मन से पढ़ें और उत्तर खोजने का प्रयत्न करें, ऐसा देखा गया है कि अपने तरीके से जो लोग मुश्किल सवालों का हल तलाशने का प्रयत्न करते हैं, वे लोग अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक मेधावी पाये गये हैं, प्रश्न में क्या बात कही गई है इस पर दिल तथा दिमाग़ से सोच समझ कर लिखने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। मंज़िल उन्हीं को मिलती है जो मंज़िल की ओर चल पड़ते हैं, यदि परिक्षार्थी द्वारा लिखने का प्रयत्न किया जायेगा तो बेशक लिख भी लेगा, ऐसा भी न होना चाहिए कि एक प्रश्न पर ही सारा समय नष्ट कर दिया जाये। आप देख लें कि थोड़ी सी कोशिश से यदि प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो जाता है तो अति उत्तम अन्यथा आगे बढ़ें।

जारी............

❖❖❖

Nadwatul Ulama
P.O. Box No. 93, Tagore Marg,
Lucknow - 226007 (India)

ندوة العلماء
ص.ب./٩٣، تيغورمارغ،
لكناؤ-٢٢٦٠٠٧ يوبى (الهند)

Date __________ ______________التاريخ

09/09/2018 ٢٨/ذی الحجہ ١٤٣٩ھ

باسمہ تعالیٰ

अपील बराए तामीर जदीद हास्टल

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमत में लगा हुआ है, दारूल उलूम में इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़ते हैं, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो जाती है। इस सूरतेहाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधक कमेटी ने नये छात्रावास के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका संगे बुन्याद हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम के दस्ते मुबारक से रखा जा चुका है, और अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 36 कमरे और 2 हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा संबन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें और वह संतुष्टि होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इस निर्माण कार्य पर 3,61,74,600 (तीन करोड़, एक्सठ लाख, चौहत्तर हज़ार, छः सौ) रूपये, और एक कमरे पर लगभग साढ़े चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे।

हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुंचेगा।

मौलाना तकीयुद्दीन नदवी	प्रो० अतहर हुसैन	मौ० सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)	(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)	(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।

NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733 (IFSC CODE - SBIN0000125)
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।

NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741316, Guest House: 2740141, Fax: 2741023
e-mail: nadwa@sancharnet.in, website: www.nadwatululama.org

उर्दू सीखये

नीचे लिखे हिन्दी अशआर की मदद से उर्दू अशआर पढ़ये

रब की महब्बत दिल में हमारे, रब की इबादत करते हैं
प्यारे नबी मह़बूब हमारे, उन की ताअ़त करते हैं
नबी की ताअ़त वाली इबादत, होती है मक़्बूल ज़रूर
सलामो रहमत कसरत से हम, नबी पे अपने पढ़ते हैं
नबी की सारी आल पर, अज़्वाज पर अस्हाब पर
रहमत की बारिश हो सब पर, रब से दुआएं करते हैं
मोमिन हो कर नबी को देखा, मौत हुई ईमान पर
रब ने दी जिस को यह दौलत, उसे सहाबी कहते हैं
सारे सहाबा अल्लाह वाले, सारे सहाबा जन्नत वाले
सब के सब रहनुमा हमारे, सब से मह़ब्बत रखते हैं

رب کی محبت دل میں ہمارے، رب کی عبادت کرتے ہیں
پیارے نبیؐ محبوب ہمارے، ان کی طاعت کرتے ہیں
نبیؐ کی طاعت والی عبادت، ہوتی ہے مقبول ضرور
سلام و رحمت کثرت سے ہم، نبیؐ پے اپنے پڑھتے ہیں
نبیؐ کی ساری آل پر، ازواج پر، اصحاب پر
رحمت کی بارش ہو سب پر، رب سے دعائیں کرتے ہیں
مومن ہو کر نبیؐ کو دیکھا، موت ہوئی ایمان پر
رب نے دی جس کو یہ دولت، اسے صحابی کہتے ہیں
سارے صحابہ اللہ والے، سارے صحابہ جنّت والے
سب کے سب رہنما ہمارے، سب سے محبّت رکھتے ہیں